सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 53, नई दिल्ली । रविवार, 05 मई 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हमारी समस्याओं का समाधान तो केवल हमारे पास ही है दूसरों के पास तो केवल सुझाव है।

03 कांग्रेस को झटका,लवली,नसीब सिंह,नीरज बसाया आदि बीजेपी में शामिल

06 नेता जी के पांव में छाले हैं

08 कृपया ध्यान दें! एयर इंडिया ने बैगेज पॉलिसी में किया बदलाव

दिल्ली - एनसीआर में आख़िर क्यों बढ़ती जा रही है अवैध पार्किंग, कौन है जिम्मेदार ?

संजय बांटला

नई दिल्ली। दिल्ली एनसीआर की जनता आज सड़को पर लगने वाले जाम से परेशान हैं पर उनकी इस समस्या का समाधान कोई भी सरकारी तंत्र में प्रशासनिक पदों, राजनीतिक पदो और राजनयिक पदो पर आसिन देने को तैयार नहीं हैं। **हा तैयार है तो उस नाम से राजस्व में इज़ाफा करवाने में या राजनीतिक फायदा उठाने में, आखिर ऐसा क्यों ?** अवैध पार्किंग, अवैध पार्किंग पर एमसीडी इत्यादि के नाम से बदमाशी से फीस लेते लोग और वह भी खास तौर पर स्कूल, हॉस्पिटल, बाजार, मुख्य सड़क, महत्वपूर्ण स्थानो पर आज आम नज़र आ जाएंगे **पर सिर्फ जनता को** यह ना तो पुलिस को दिखते हैं ना परिवहन विभाग को ना यातायात पुलिस को, ना एमसीडी को ना प्रवर्तन शाखा के अधिकारियों/ कर्मचारियों को, आख़िर ऐसा क्यों ? इस तरह से वाहन खड़े मिलेंगे की 4 लेन वाली सड़क पर एक लेन का यातायात भी नहीं निकल सकता। **आखिर जनता की जिन्दगी की सुरक्षा को दरकिनार कर एकत्र की जा रही यह रकम किसके फायदे के लिए, है क्या कोई बताने वाला**

भारत सरकार, दिल्ली सरकार, हरियाणा सरकार और यूपी सरकार के साथ दिल्ली के उपराज्यपाल एवम्हरियाणा और यूपी के राज्यपाल सब कुछ जानते बुझते सड़को पर अवैध पार्किंग और अवैध तरीके से जनता से अवैध पार्किंग के लिए फीस लेकर अन्य सड़को पर चलने वाली जनता और वाहन चालकों की जान जोखिम में क्यों डलवा रहे हैं ? **कृप्या जवाब दे**

सराय काले खां रैपिड मेट्रो स्टेशन पर होंगे 14 लिफ्ट,18 एस्केलेटर और 6 प्लेटफार्म, मिलेगी सभी आधुनिक सुविधाएं

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। रैपिड रेल ट्रांजिट के दिल्ली स्थित सराय काले खां स्टेशन पुरे भारत का सबसे शानदार स्टेशन में गिना जायेगा. सराय काले खां दिल्ली का ऐसा स्टेशन होगा जिसमे सभी आधुनिक सुविधा आपके फिंगर टिप पर उपलब्ध होंगी. (एनसीआरटीसी) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम के द्वारा बनाया जाने वाला यह रैपिड रेल स्टेशन अपने कंस्ट्रक्शन के अंतिम दौर में है. सराय काले खां स्टेशन की कुल लम्बाई 215 मीटर, चौड़ाई 50 मीटर और ऊंचाई 15 मीटर है. इसमें एक ही फ्लोर पर चार रेल ट्रैक के साथ 6 प्लेटफार्म होंगे. जहाँ से मेरठ के लिए रैपिड रेल पकड़ी जा सकेगी. यहाँ से तीन कॉरिडोर पर जाने के लिए ट्रेन मिलेगी. पहलाः- दिल्ली-गाज़ियाबाद-मेरठ, दूसराः- दिल्ली-एसएनबी और तीसराः- दिल्ली-पानीपत कॉरिडॉर. सराय काले खां आरआरटीएस स्टेशन से बस अड्डे (वीर हकीकत राय) की दुरी मात्र 85 मीटर है. यह एक मल्टी मॉडल रेलवे स्टेशन होगा. बिना स्टेशन परिसर से बाहर गए एक ही कैंपस से सराय काले खां स्टेशन से दिल्ली मेट्रो, आईएसबीटी बस और भारतीय रेल तीनो के लिए यात्रा की सुविधा उपलब्ध होगी। इस स्टेशन पर कॉनकोर्स और प्लेटफॉर्म बन कर तैयार है. अब फिनिशिंग का काम कम्पलीट होने को है. ट्रेन के दौड़ने के लिए लोहे का ट्रैक बिछाने का काम शुरू होने वाला है. रेलवे के यात्री के लिए मात्र 280 मीटर की दुरी पर निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन है. साथ ही मात्र 70 मीटर की दुरी पर दिल्ली का शानदार रिंग रोड है. इस रैपिड रेल स्टेशन पर 14 लिफ्ट और 18 एस्केलेटर लगाए जा रहे है। साथ ही कॉनकोर्स लेवल से प्लेटफॉर्म पर आने जाने के लिए 4 एस्केलेटर्स लगाए जा चुके हैं।

दिल्ली एनसीआर को जाम मुक्त करने हेतु जल्द शुरू होंगे 3 एक्सप्रेस-वे....

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली एनसीआर में ट्रैफिक जाम को ख़त्म करने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय जनता के प्रति वचनबद्ध है. जिसके लिए नई सड़को और हाईवे निर्माण के प्रोजेक्ट शुरु किये जा रहे है. वर्तमान में दिल्ली एनसीआर में कुल 8 प्रोजेक्ट पर जोर-शोर से काम चल रहा है. मिली जानकारी के अनुसार आने वाले दिसम्बर तक इनमे से 7 पूरे होकर जनता को समर्पित कर दिए जाएंगे. इनसे सबसे ज्यादा फायदा नोएडा, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और आईजीआई एयरपोर्ट को होगा. आइये इनमे से कुछ प्रोजेक्ट के बारे में जानते है.

डीएनडी इंटरचेंज फ्लाईओवर और कालिंदी कुंज कनेक्टिविटी: इस प्रोजेक्ट के पूर्ण होने से लोग महारानी बाग से कालिंदी कुंज होते हुए दिल्ली – मुंबई एक्सप्रेसवे जा सकते है. साथ ही इसी एक्सप्रेसवे से केएमपी (कुंडली – मानेसर – पलवल) एक्सप्रेसवे पर भी जा सकेंगे. इस एक्सप्रेसवे के माध्यम से दिल्ली के महारानी बाग से सीधा सोहना, केएमपी एक्सप्रेसवे और फिर दिल्ली मुंबई एक्सप्रेसवे. यह 6 लेन का एक्सप्रेसवे होगा. यह एक्सप्रेसवे लगभग 60 किमी लम्बा है. इसका 90% काम पूरा होगा गया है और यह दिसम्बर तक सभी लोगो के लिए चालू कर दिया जायेगा.

अर्बन एक्सटेंशन रोड (यूईआर-2): दिल्ली का यह रोड ट्रैफिक जाम को मुक्त करने में सबसे ज्यादा कारगर साबित होने वाला है. क्योकि यह दिल्ली का तीसरा रिंग रोड होगा. ऑफिशियली इसे अर्बन एक्सटेंशन रोड के नाम से जाना जाता है. यह 6 लेन का रोड होगा. इसमें कही भी लाल बत्ती नहीं होगी. मतलब 76 किमी इस रोड में कही भी रुकने की जरुरत नहीं. यह सड़क दिल्ली को चारो तरफ से घेरेगी. (नॉर्थ, नॉर्थ-वेस्ट, वेस्ट, साउथ-वेस्ट दिल्ली, गुरुग्राम और एनएच-44). इसका निर्माण कार्य 90% पूरा कर लिया गया है.

दिल्ली एयरपोर्ट से जेवर एयरपोर्ट एक्सप्रेसवे: यह एक शानदार एक्सप्रेसवे प्लान है क्योकि इससे एयरपोर्ट आपस में जुड़ जायेंगे. इसको दिल्ली के इंदिरा गाँधी एअरपोर्ट से नोएडा के जेवर एयरपोर्ट तक विकसित किया जा रहा है. इसकी लम्बाई 32 किलोमीटर है. 2900 करोड़ की लागत से बनने वाले इस एक्सप्रेसवे की कनेक्टिविटी दिल्ली मुंबई एक्सप्रेसवे से भी रखी जाएगी।

बनेगा दिल्ली का दूसरा बड़ा स्काईवॉक, जोड़ेगा बस अड्डे, रेलवे स्टेशन और मेट्रो स्टेशन को

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सराय काले खां में जल्द ही दिल्ली का दूसरा सबसे बड़ा स्काईवॉक बनने वाला है, जो आरआरटीएस स्टेशन, निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन, मेट्रो स्टेशन, और आइएसबीटी को एक साथ जोड़ेगा। यह मल्टी मॉडल इंट्रीगेशन प्लान सार्वजनिक परिवहन को सुगम बनाने के लिए बनाया गया है। सराय काले खां में आरआरटीएस स्टेशन के निर्माण से दिल्ली के प्रमुख परिवहन हब में से एक बनने की संभावना है। यह स्टेशन दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, और राजस्थान को जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण होगा। यहाँ से दिल्ली-मेरठ, दिल्ली-पानीपत, और दिल्ली-एसएनबी (शाहजहांपुर-नीमराणा-बहरोड़) की रैपिड ट्रेनों का आगमन होगा।

स्काईवॉक की विशेषताएं हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन और आरआरटीएस स्टेशन के बीच 280 मीटर की दूरी है, जिसे फुट ओवरब्रिज द्वारा जोड़ा जाएगा। यात्रियों की सुविधा के लिए इस फुट ओवरब्रिज पर छह ट्रैवलेटर की सुविधा प्रदान की जाएगी। यह महिलाओं, बुजुर्गों, बच्चों, विकलांगों, और भारी सामान के साथ यात्रा करने वाले लोगों के लिए उपयोगी होगा।

आइएसबीटी और मेट्रो स्टेशन की कनेक्टिविटी वीर हकीकत राय आइएसबीटी और सराय काले खां आरआरटीएस स्टेशन के बीच 85 मीटर की दूरी है। आरआरटीएस स्टेशन को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि एक प्रवेश और निकास द्वार आइएसबीटी के पास बनाया जाएगा। इसी प्रकार, मेट्रो पिंक लाइन स्टेशन और आरआरटीएस स्टेशन के बीच 70 मीटर की दूरी है, जिसे यात्रियों की सुविधा के लिए सीधे जोड़ा जाएगा। इस नए स्काईवॉक से दिल्ली के परिवहन साधनों के बीच संपर्क को और अधिक सहज बनाया जा सकेगा, जिससे यात्रियों की यात्रा अधिक सुविधाजनक और तेज हो जाएगी।

जल्द मिलने की आशा दिल्ली मेट्रो को नया कॉरिडोर....

बादली-सिरसपुर मेट्रो कॉरिडोर और वहां से विस्तार में खेड़ा कलां मेट्रो डिपो

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो अब आउटर इलाके में अपना पंख फैला रहा है. दिल्ली मेट्रो की येलो लाइन के विस्तार के लिए दिल्ली मेट्रो रेल निगम ने बादली-सिरसपुर मेट्रो कॉरिडोर की पूरी तैयारी कर ली है. इसकी फिजिबिलिटी रिपोर्ट तैयार कर ली गई है और अनुमति मिलते ही तेजी से इस कॉरिडोर का काम शुरू कर दिया जायेगा. गुरुग्राम से बादली जाने वाली दिल्ली मेट्रो की येलो लाइन को अब बादली से सिरसपुर तक एक्सटेंड किया जायेगा और आगे विस्तार की अनुमति मिली तो सिरसपुर से खेड़ा कलां मेट्रो डिपो तक इस कॉरिडोर का विस्तार किया जायेगा. जानकार सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस कॉरिडोर को बस अनुमति मिलने का इंतजार है . इसके लिए आवश्यक सभी डॉक्यूमेंटेशन दिल्ली मेट्रो रेल निगम ने कम्पलीट कर रखे है. आपकी जानकारी हेतु बता दें दिल्ली मेट्रो फेज 4 के तहत कुल 6 लाइन का निर्माण किया जा रहा है. जिसका विस्तार 103.93 किलोमीटर तक होगा. इस फेज 4 के तहत गोल्डन लाइन, पिंक लाइन, मजेंटा लाइन, ग्रीन लाइन और रेड लाइन का विस्तार किया जायेगा.

पर्यावरण पाठशाला : मैं महज़ एक सड़क से कहीं ज़्यादा हूँ ; एक सड़क की आत्मगाथा -अंकुर

परिवहन विशेष

मैं तुम्हारे देश की सड़क हूं, मैंने तुम्हें आने-जाने में रोज मदद की, मैं धरती मां का हिस्सा हूं, मैं आपका और आपके परिवार, आपके प्रियजनों का समर्थन करता हूं और दैनिक आधार पर इतनी सारी दुर्घटनाओं के बाद मैं वास्तव में निराश हूं।

दुर्घटना से पहले:

मैं एक महत्वाकांक्षी परियोजना, कनेक्टिविटी और प्रगति के दृष्टिकोण के रूप में अस्तित्व में आया। सर्वेक्षणकर्ताओं ने मेरे पथ को चिह्नित किया, इंजीनियरों ने सावधानीपूर्वक मेरे लेआउट की योजना बनाई, और निर्माण कर्मचारियों ने मुझे अस्तित्व में लाने में अपना पसीना और परिश्रम डाला। यात्रियों के सपनों और वाणिज्य की जरूरतों से जन्मा, मैं एक महत्वपूर्ण धमनी के रूप में उभरा, जो दूर के गंतव्यों को जोड़ता है और रास्ते में अवसरों को बढ़ावा देता है।

अपनी शैशवावस्था में, मैं अपने परिवेश के उत्साह का गवाह रहा हूँ। सभी आकृतियों और आकारों के वाहन मेरी सतह से गुज़रे, उनके पहिये रोमांच के वादे के साथ गुनगुना रहे थे। पैदल यात्री मेरे फुटपाथों पर टहल रहे थे, उनके कदम शहरी जीवन की लय को प्रतिध्वनित कर रहे थे। मैं सिर्फ एक मार्ग से कहीं अधिक बन गया; मैं कहानियों का माध्यम बन गया, मानवता के उतार-चढ़ाव का गवाह बन गया।

जैसे-जैसे साल बीतते गए, मैं परिपक्व और विकसित हुआ। बजरी की जगह डामर ने ले ली, गलियाँ बढ़ गईं, और चिन्ह जंगली फूलों की तरह उग आए। मैंने आधुनिक सभ्यता की बढ़ती माँगों को स्वीकार करते हुए, बदलते समय के साथ तालमेल बिठाया। प्रगति का भार उठाने के लिए मेरे कंधे चौड़े हो गए, आसान यात्राओं को सुविधाजनक बनाने के लिए मेरे मोड़ चिकने हो गए, और मेरे चौराहे ऊर्जा और उद्देश्य से भरपूर गतिविधि के केंद्र बन गए।

मेरा सुनहरे दिन गति और जीवन शक्ति का एक स्वर था। सुबह से शाम तक, मैं एक संपन्न समुदाय के दिल की धड़कन से धड़कता रहा। दूर-दराज के बाज़ारों के लिए सामान लेकर ट्रक दौड़ रहे थे, परिवार सप्ताहांत की छुट्टियों पर निकल पड़े, और यात्री काम पर जाने के लिए अपनी दैनिक तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। प्रत्येक गुजरते वाहन ने मेरी सतह पर एक अमिट छाप छोड़ी, जो उन अनगिनत जिंदगियों का प्रमाण है जिन्हें मैं दैनिक आधार पर छूता हूं।

दुर्घटना के बाद:

फिर, एक मनहूस दिन, आपदा आ गई। ब्रेक की आवाज़, धातु की भयानक आवाज़ और सायरन की आवाज़ ने मेरे अस्तित्व की शांति को भंग कर दिया। एक अप्रत्याशित और निर्दयी दुर्घटना ने मेरे अस्तित्व को तहस-नहस कर दिया और अपने पीछे विनाश का निशान छोड़ गई।

इसके बाद, मैं टूटा हुआ और पस्त पड़ा हुआ था, मेरी एक बार चिकनी सतह निशान और मलबे से खराब हो गई थी। यातायात का प्रवाह रुक गया, उसकी जगह आपातकालीन प्रतिक्रियाकर्ताओं और संबंधित दर्शकों के शोर ने ले ली। कई दिनों तक, मैं जीवन की नाजुकता की एक गंभीर अनुस्मारक बनी रही, डामर और खून में उकेरी गई एक सतर्क कहानी।

लेकिन मलबे के बीच, आशा की एक किरण उभरी। इंजीनियर और निर्माण दल उद्देश्य और दृढ़ संकल्प की भावना के साथ मेरे पास आए। टुकड़े-टुकड़े करके, उन्होंने बड़ी मेहनत से मुझे मेरा पूर्व गौरव लौटाया, क्षति की मरम्मत की और मेरी नींव को मजबूत किया। यह एक धीमी और कठिन प्रक्रिया थी, जो असफलताओं और चुनौतियों से भरी थी, लेकिन दृढ़ता और टीम वर्क के माध्यम से, मैं राख से उठना शुरू कर दिया।

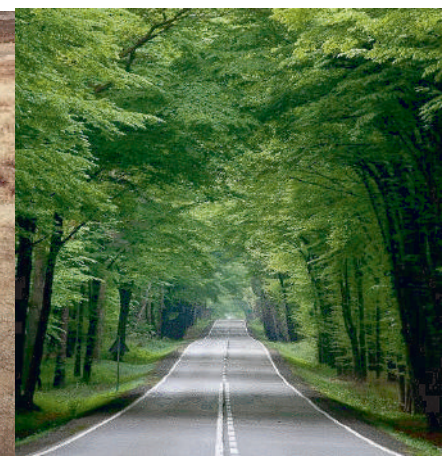

आज, मैं नवीकरण के प्रमाण के रूप में खड़ा हूं। हालाँकि दुर्घटना के निशान अभी भी मौजूद हैं, लेकिन वे भीतर मौजूद ताकत की याद दिलाते हैं। एक बार फिर, वाहन मेरी सतह से गुज़र रहे हैं, पैदल यात्री मेरे फुटपाथों पर चल रहे हैं, और जीवन मेरी रगों में नए जोश के साथ बह रहा है। मैं महज़ एक सड़क से कहीं ज़्यादा हूँ; मैं एक जीवित व्यक्ति हूं, विपरीत परिस्थितियों में आशा का प्रतीक हूं। और जब तक यात्राएं करनी होंगी और सपनों का पीछा करना होगा, मैं कल के रास्ते पर दृढ़ और अटल रहूँगा।

indiangreenbuddy@gmail.com

परशुराम क्षत्रियों के दमन से विश्व को मुक्ति दिलाने वाले

परशुराम राजा प्रसेनजित की पुत्री रेणुका और भृगुवंशीय जमदग्नि के पुत्र थे। वे विष्णु के अवतार और शिव के परम भक्त थे। इन्हें शिव से विशेष परशु प्राप्त हुआ था। इनका नाम तो राम था, किंतु शंकर द्वारा प्रदत्त अमोघ परशु को सदैव धारण किए रहने के कारण ये परशुराम कहलाते थे। परशुराम भगवान विष्णु के दस अवतारों में से छठे अवतार थे, जो वामन एवं रामचंद्र के मध्य में गिना जाता है। जमदग्नि के पुत्र होने के कारण ये जामदग्न्य भी कहे जाते हैं। इनका जन्म अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तृतीया) को हुआ था। अतः इस दिन व्रत करने और उत्सव मनाने की प्रथा है। परंपरा के अनुसार इन्होंने क्षत्रियों का अनेक बार विनाश किया। क्षत्रियों के अहंकारपूर्ण दमन से विश्व को मुक्ति दिलाने के लिए इनका जन्म हुआ था'

जन्म

भृगु ने अपने पुत्र के विवाह के विषय में जाना तो बहुत प्रसन्न हुए तथा अपनी पुत्रवधू से वर मांगने को कहा। उनसे सत्यवती ने अपने तथा अपनी माता के लिए पुत्र जन्म की कामना की। भृगु ने उन दोनों को चरु भक्षणार्थ दिए तथा कहा कि ऋतुकाल के उपरांत स्नान करके सत्यवती गूलर के पेड़ तथा उसकी माता पीपल के पेड़ का आलिंगन करे तो दोनों को पुत्र प्राप्त होंगे। मां-बेटी के चरु खाने में उलट-फेर हो गई। दिव्य दृष्टि से देखकर भृगु पुनः वहां पधारे तथा उन्होंने सत्यवती से कहा कि तुम्हारी माता का पुत्र क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मणोचित व्यवहार करेगा तथा तुम्हारा बेटा ब्राह्मणोचित होकर भी क्षत्रियोचित आचार-विचार वाला होगा। बहुत अनुनय-विनय करने पर भृगु ने मान लिया कि सत्यवती का बेटा ब्राह्मणोचित रहेगा, किंतु पोता क्षत्रियों की तरह कार्य करने वाला होगा। सत्यवती के पुत्र जमदग्नि मुनि हुए। उन्होंने राजा प्रसेनजित की पुत्री रेणुका से विवाह किया। रेणुका के पांच पुत्र हुए : रुमण्वान, सुषेण, वसु, विश्वावसु तथा पांचवें पुत्र का नाम परशुराम था। वही क्षत्रियोचित आचार-विचार वाला पुत्र था। एक बार सद्यस्नाता रेणुका राजा चित्ररथ पर मुग्ध हो गई। उसके आश्रम पहुंचने पर मुनि को दिव्य ज्ञान से समस्त घटना ज्ञात हो गई। उन्होंने क्रोध के आवेश में बारी-बारी से अपने चार बेटों को मां की हत्या करने का आदेश दिया। किंतु कोई भी तैयार नहीं हुआ। जमदग्नि ने अपने चारों पुत्रों को जड़बुद्ध होने का शाप दिया। परशुराम ने तुरंत पिता की आज्ञा का पालन किया। जमदग्नि ने प्रसन्न होकर उसे वर मांगने के लिए कहा। परशुराम ने पहले वर से मां का पुनर्जीवन मांगा और फिर अपने भाइयों को क्षमा कर देने के लिए कहा। जमदग्नि ऋषि ने परशुराम से कहा कि वह अमर रहेगा।

एक दिन जब परशुराम बाहर गए थे तो कार्तवीर्य अर्जुन उनकी कुटिया पर आए। युद्ध के मद में उन्होंने रेणुका का अपमान किया तथा उसके बछड़ों का हरण करके चले गए। गाय रंभाती रह गई। परशुराम को मालूम पड़ा तो क्रुद्ध होकर उन्होंने सहस्रबाहु हैहयराज को मार डाला। हैहयराज के पुत्र ने आश्रम पर धावा बोला तथा परशुराम की अनुपस्थिति में मुनि जमदग्नि को मार डाला। परशुराम घर पहुंचे तो बहुत दुखी हुए तथा पृथ्वी को क्षत्रियहीन करने का संकल्प किया। अतः परशुराम ने इक्कीस बार पृथ्वी के समस्त क्षत्रियों का संहार किया। समंत पंचक क्षेत्र में पांच रुधिर के कुंड भर दिए। क्षत्रियों के रुधिर से परशुराम ने अपने पितरों का तर्पण किया। उस समय ऋचीक साक्षात प्रकट हुए तथा उन्होंने परशुराम को ऐसा कार्य करने से रोका। ऋत्विजों को दक्षिणा में पृथ्वी प्रदान की। ब्राह्मणों ने कश्यप की आज्ञा से उस वेदी को खंड-खंड करके बांट लिया, अतः वे ब्राह्मण जिन्होंने वेदी को परस्पर बांट लिया था, खांडवायन कहलाए।

कथा

एक बार उनकी मां जल का कलश लेकर भरने के लिए नदी पर गईं। वहां गंधर्व चित्ररथ अप्सराओं के साथ जलक्रीड़ा कर रहा था। उसे देखने में रेणुका इतनी तन्मय हो गई कि जल लाने में विलंब हो गया तथा यज्ञ का समय व्यतीत हो गया। उसकी मानसिक स्थिति समझकर जमदग्नि ने अपने पुत्रों को उसका वध करने के लिए कहा। परशुराम के अतिरिक्त कोई भी ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हुआ। पिता के कहने से परशुराम ने मां का वध कर दिया। पिता के प्रसन्न होने पर उन्होंने वरदान स्वरूप उनका जीवित होना मांगा।

राम के पराक्रम की परीक्षा

राम का पराक्रम सुनकर वे अयोध्या गए। दशरथ ने उनके स्वागतार्थ रामचंद्र को भेजा। उन्हें देखते ही परशुराम ने उनके पराक्रम की परीक्षा लेनी चाही। अतः उन्हें क्षत्रियसंहारक दिव्य धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए कहा। राम के ऐसा कर लेने पर उन्हें धनुष पर एक दिव्य बाण चढ़ाकर दिखाने के लिए कहा। राम ने वह बाण चढ़ाकर परशुराम के तेज पर छोड़ दिया। बाण उनके तेज को छीनकर पुनः राम के पास लौट आया। राम ने परशुराम को दिव्य दृष्टि दी, जिससे उन्होंने राम के यथार्थ स्वरूप के दर्शन किए। परशुराम एक वर्ष तक लज्जित, तेजहीन तथा अभिमानशून्य होकर तपस्या में लगे रहे। तदनंतर पितरों से प्रेरणा पाकर उन्होंने वधूसर नामक नदी के तीर्थ पर स्नान करके अपना तेज पुनः प्राप्त किया।

लाभकारी है अमावस्या का व्रत

अमावस्या की तिथि का हिंदू धर्म में बड़ा ही महत्त्व बताया गया है। जिस तिथि में चंद्रमा और सूर्य साथ रहते हैं, वही 'अमावस्या' तिथि है। इसे 'अमावसी' भी कहा जाता है। अमावस्या माह की तीसवीं तिथि होती है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को कृष्ण पक्ष प्रारंभ होता है तथा अमावस्या को समाप्त होता है। अमावस्या पर सूर्य और चंद्रमा का अंतर शून्य हो जाता है'

नामकरण

अमावस्या के नामकरण हेतु मत्स्य पुराण के 14वें अध्याय में एक रूपक कथा आती है, जिसके अनुसार प्राचीन काल में पितरों ने 'आच्छोद' नामक एक सरोवर का निर्माण किया था। इन देव पितरों की एक मानसी कन्या थी, जिसका नाम था 'अच्छोदा'। अच्छोदा ने एक बार एक सहस्त्र दिव्य वर्षों तक कठिन तप किया।

अतः उसे वर देने के लिए पितरगण पधारे। उनमें से एक अतिशय सुंदर 'अमावसु' नामक पितर को देखकर 'अच्छोदा' उन पर अनुरक्त हो गई और अमावसु से प्रणय याचना करने लगी। किंतु अमावसु इसके लिए तैयार नहीं हुए। अमावसु के धैर्य के कारण उस दिन की तिथि पितरों को अतिशय प्रिय हुई। उस दिन कृष्ण पक्ष की पंचदशी तिथि थी, जो कि तभी से 'अमावसु' के नाम पर 'अमावस्या' कहलाने लगी।

अमावस्या पर व्रत

धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि अमावस्या को व्रत करना चाहिए। अमावस्या के दिन ऐसे ही कार्य करने चाहिएं जो परमात्मा के पास में ही बिठाने वाले हों। सांसारिक खेती-बाड़ी, व्यापार आदि कर्म तो परमात्मा से दूर हटाने वाले हैं। संध्या हवन, सत्संग, परमात्मा का स्मरण, ध्यान कर्म परमात्मा के पास बैठाते हैं। इसलिए माह में एक दिन उपवास अवश्य ही करना चाहिए और वह दिन अमावस्या का ही श्रेष्ठ मान्य है क्योंकि सूर्य और चंद्रमा, ये दोनों शक्तिशाली ग्रह अमावस्या के दिन एक ही राशि में आ जाते हैं। इसलिए अमावस्या का व्रत करना चाहिए। उस दिन अन्न खाना वर्जित किया गया है और व्रत का विधान किया गया है।

महत्त्व

अमावस्या के स्वामी 'पितर' होते हैं। इस तिथि में चंद्रमा की सोलहवीं कला जल में प्रविष्ट हो जाती है। चंद्रमा का वास अमावस्या के दिन औषधियों में रहता है, अतः जल और औषधियों में प्रविष्ट उस अमृत का ग्रहण गाय, बैल, भैंस आदि पशुचारे एवं पानी के द्वारा करते हैं, जिससे वही अमृत हमें दूध, घी आदि के रूप में प्राप्त होता है और उसी घृत की आहुति ऋषिगण यज्ञ के माध्यम से पुनः चंद्रादि देवताओं तक पहुंचाते हैं। वही अमृत फिर बढ़कर पूर्णिमा को चरम सीमा पर पहुंचाता है।

श्रीमद्भागवत गीता

श्रीमद्भागवत गीता एक पवित्र ग्रंथ है। गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं, जो सभी महत्वपूर्ण है। महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिए थे, वही गीता है. गीता में आत्मा, परमात्मा, भक्ति, कर्म, जीवन आदि का वृहद रूप से वर्णन किया गया है।

गीता से हमें यह ज्ञान मिलता है कि व्यक्ति को केवल अपने काम और कर्म पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही कर्म करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम जो भी कर्म कर रहे हैं, उसका फल भी हमें निश्चित ही प्राप्त होगा, अतः परमार्थ कर्तव्य कर्म उत्तम कोटि के माने गए हैं।

गीता हमें बताती है कि जीवन क्या है और इसे कैसे जीना चाहिए, आत्मा और परमात्मा का मिलन कैसे होते है, अच्छे और बुरे की समझ क्यों जरूरी है. इन सभी गूढ़ सवालों से जवाब हमें गीता से प्राप्त होते हैं. लेकिन सवाल यह है कि गीता का पूर्णतः ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

गीता या फिर किसी भी पाठ से ज्ञान को प्राप्त करने के चार स्तर होते हैं-:

* 1.श्रवण या पठन ज्ञान।
* 2.मनन ज्ञान।
* 3.निदिध्यासन ज्ञान।
* 4.अनुभव ज्ञान।

इन चारों स्तर से गुजरने के बाद ही किसी भी ज्ञान की पूर्णता होती है और इससे समुचित लाभ होता है. इसका अर्थ यह है कि आप पहले पढ़ते या सुनते हैं, इसके बाद पढ़े-सुने ज्ञान के बारे में चिंतन व मनन करते हैं, यदि वह आपको ठीक और उपयोगी लगती है तब उसका अभ्यास कर उसे अपने जीवन में उतारते हैं और आखिर में उस ज्ञान का प्रतिफल आपको मिलता है।

किसी भी ज्ञान को आप पढ़कर या सुनकर छोड़ देंगे, उसे अपनाएंगे नहीं तो उसका फल कैसे मिलेगा. यही बात गीता पर भी लागू होती है. जब हम गीता पढ़कर उसके उपदेशों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चित ही सुपरिणाम सामने आएगा।

कितनी बार पढ़ना चाहिए श्रीमद्भागवत गीता और क्या है इसके लाभ-:

* जब हम पहली बार गीता पढ़ते हैं तो इसे हम एक अंधे व्यक्ति के रूप मे पढ़ते हैं. यानी हमें केवल इतना ही समझ पाते हैं कि कौन किसके पिता, कौन किसकी बहन और कौन किसका भाई है. पहली बार गीता पढ़ने पर इससे ज्यादा कुछ समझ में नहीं आता।
* जब हम दूसरी बार गीता पढ़ते हैं तो मन में कुछ सवाल जागृत होंगे कि ऐसा क्यों किया गया या वैसा क्यों हुआ. !
* जब हम तीसरी बार गीता पढ़ेंगे तो इसके अर्थ को समझने लगेंगे. हालांकि हर व्यक्ति को इसका अर्थ अपने तरीके से ही समझ आएगा।
* जब चौथी बार हम गीता पढेंगे तो हर एक पात्र से जुड़ी भावनाओं को समझ पायेंगे. जैसे अर्जुन के मन में या दुर्योधन के मन में क्या चल रहा हैं।
* पांचवी बार गीता को पढ़ने से पूरा कुरूक्षेत्र हमारे मन में खड़ा हो जाता है और हमारे मन में अलग- अलग कल्पनायें होती हैं।
* छठवीं बार गीता पढ़ने से हम भगवान को अपने सामने अनुभव करने लगते हैं और हमें ऐसा लगता है कि भगवान हमारे सामने ये सब बता रहे हैं।
* सातवीं बार गीता को पढ़ते से हमें यह पर्णतः अहसास हो जाता है कि कृष्ण कहीं बाहर नहीं बल्कि हमारे भीतर ही हैं और हम उनके भीतर।

श्रीमद्भगवत गीता पाठ के नियम-:

* वैसे तो भगवत गीता किसी भी समय पढ़ी जा सकती है, लेकिन सुबह का समय सबसे उत्तम माना जाता है. क्योंकि इस समय मन, मस्तिष्क और वातावरण में शांति व सकारात्मकता होती है।
* गीता का पाठ हमेशा स्नान के बाद और शांत चित्त मन से व शांत वातावरण में ही करना चाहिए।
* पाठ करते समय बीच-बीच में इधर-उधर की बातें नहीं करनी चाहिए और न ही किसी कार्य के लिए बार-बार उठना चाहिए।
* साफ-सफाई वाले स्थान और जमीन पर आसन बिछाकर ही गीता का पाठ करना चाहिए।
* गीता के प्रत्येक अध्याय को शुरू करने से पहले और बाद भगवान श्रीकृष्ण और गीता के चरण कमलों को ध्यान व स्पर्श करना चाहिए।।

पर्व काल में व विशेष दिनों के दौरान जैसे अमावस्या, पूर्णिमा, एकादशी, अक्षय तृतीया आदि विशेष तिथियों पर गीता के पाठ करने से पुण्यों की प्राप्ति होती व ईश्वर से समीपता बढ़ती है।।

स्वयं करें, पितृ दोष का निवारण

किसी गलत कर्म वश व पितरों के प्रति हुई गलतियां के कारण हमारी जन्म कुंडली में पितृ दोष बन जाता है। और अक्सर देखा गया है कि यदि परिवार के एक सदस्य की जन्म कुंडली में पितृ दोष है तो परिवार के सभी लोगों की कुंडली में पितृ दोष पाया जा सकता है। अतः जन्म कुंडली देखकर पितृ दोष का अनुमान लगाया जा सकता है कि वह किस स्तर का है, जन्म कुंडली में किस भाव में पितृदोष बन रहा है और वह कितनी बड़ी परेशानियां दे सकता है।

पितृ दोष की वजह से हमारे जीवन में कई तरह की परेशानियां बनी रहती है।

पितृ दोष होने पर मिलते हैं ये संकेत

- यदि किसी जातक की कुंडली में पितृ दोष हो तो उसे अपनी जीवन में कई कष्ट झेलने पड़ते हैं। पितृ दोष के कारण शादी- विवाह में भी बाधा आती है। ऐसे में विवाह में देरी होती है।

- पितृ दोष के कारण वंश वृद्धि रुक जाती है। ऐसे में संतान प्राप्ति में बाधा आती है। साथ ही संतान राह भटक जाता है।

- पितृ दोष धन हानि और परिवार की तरक्की में रुकावट का कारण बनता है। कई कोशिशों के बाद भी व्यक्ति को सफलता नहीं मिल पाती है। पितरों के नाराज होने से व्यक्ति कंगाली की ओर चला जाता है। साथ ही परिवार को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।

पितृ शांति के लिए बड़े-बड़े अनुष्ठान करवाने के बावजूद हैं भी स्थिति में कोई सुधार नहीं होता और समस्या जैस की तैस बनी रहती है। उपाय के नाम पर बड़े व मोटे खर्चे कर दिए जाते लेकिन फिर भी समस्याओं का निराकरण नहीं होता। ध्यान रहे पितृ दोष का निवारण आप स्वयं भी अपने प्रयासों से कर सकते हैं। यदि आपकी कुंडली में पितृ दोष है तो हम आपको पितृदोष निवारण के अचूक उपाय बताएंगे जो आप स्वयं वह उपाय करके पितृ दोष से मुक्ति पा सकते हैं।

संस्कारशाला : दिशाहीन भविष्य – पूनम श्रीवास्तव

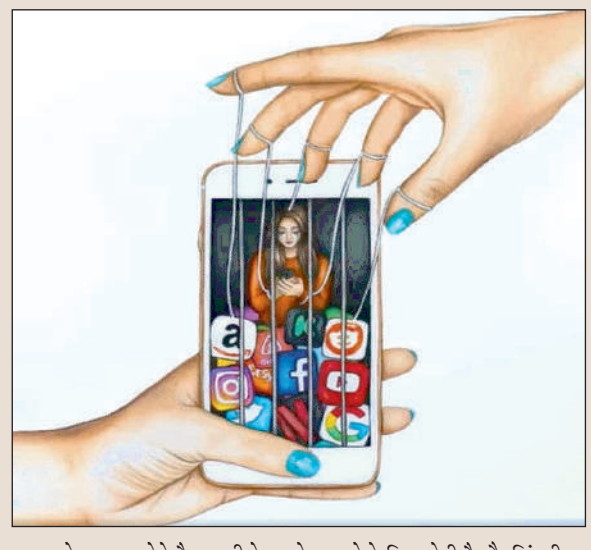

"मैं समय हूं" याद है ये डायलॉग जिसके सुनते ही बहुत से भाव अचानक से एक साथ ही उभर आते थे। एक भारी सी पर सधी हुई अवाज हमें एहसास दिला देती थी कि कुछ है जो घटता जा रहा है। पल पल कम होता जा रहा है। और वो है समय। हम जितना भी तेज भाग ले हमसे कुछ ना कुछ छूट ही जाएगा।

समय जो हमें ना सिर्फ आगे बढ़ना, और नहीं रुकना सिखाता है बल्कि हमें वर्तमान में जीना और बीती हुई बातों को भुलाना भी सिखाता है।

पर आज का दौर कुछ और ही हो गया है जब से टेक्नोलॉजी आई है खास तौर से मोबाइल फोन। पता नहीं चलता वाई फाई ज्यादा फ्री है या हम ? हर इंसान औसत तौर पर 4-5 घंटे मोबाइल पर निकाल देता है और हासिल आता है कुछ नहीं। पहले इन्ही 4-5 घंटो मे वो कुछ ना कुछ रचनात्मक किया करता था। और अब जिन चीज़ो में समय जाता है वो बस मनोरंजन से जुड़ी हुई होती है। मनोरंजन इतना क्या जरुरी हो गया कि हम अपना कीमती समय बेकार से मनोरंजन पर बिताने लगे है।

आज का समय मुझे रोम के उस दौर की याद दिलाता है जब के राजा गलेडिएट्स को लडवाते थे और पूरा शहर अपना सारा काम छोड़कर बस मनोरंजन मे व्यस्त हो जाता था। अब ऐसे राजा से कोई शिकायत करे भी तो क्या करे? दो वक्त की रोटी और मुफ्त का मनोरंजन बस राजा भी खुश और प्रजा भी खुश। पर सब ये भूल जाते है कि भगवान ने हमे एक उदेश्य के साथ धरती पर भेजा है। बुद्धि, विवेक और संयम जैसे गुणों के साथ भेजा है जिनका उपयोग हमें करना चाहिए। नहीं तो हममें और जानवरो मे कोई फर्क नहीं रह जाएगा।

पहले हम जो करना होता था उसे तय करते थे फिर आगे बढ़ते थे पर आज हम सोशल मिडिया के मायाजाल मे फंस गए है हम पहले शुरु कर देते है फिर भूल भूलैया मे खो जाते है..हमें पता ही नहीं रहता कि हमें देखना क्या है? और क्योकि मंजिल तय नहीं होती इसलिए हम वापस नहीं आ पाते और बढ़ाते चले जाते है।

हमें पता होना चाहिए कि कब रुकना है क्योंकि समय किसीके लिए नहीं रुकता और तेजी से बढ़ता ही चला जा रहा है। हमें ये भी पता होना चाहिए कि चीज़े उपयोग करने के लिए होती है और जिंदगी का एक हिस्सा बस है पूरी जिंदगी नहीं है और ये बात हर आयु के लोगो पर लागू होती है क्योंकि मोबाइल के काले साए से कोई नहीं बच पा रहा है।

हमें अपनी बुद्धि, विवेक और संयम से काम लेना होगा तभी हम इस मायाजाल से निकल पाएंगे और समय का सही उपयोग कर पाएंगे पर ये एक दिन में नहीं होगा लेकिन एक दिन जरूर होगा।

कांग्रेस को झटका, लवली, नसीब सिंह, नीरज बसाया, राजकुमार चौहान, अमित मलिक बीजेपी में

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। लोकसभा चुनावों के बीच राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में कांग्रेस को बडा झटका लगा है। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने वाले अरविंद सिंह लवली के साथ कांग्रेस के कई कदावर नेताओ ने कांग्रेस का हाथ झटक के भाजपा का दामन थाम लिया है। इनमें राजकुमार चौहान, नसीब सिह, नीरज बसाय, और अमित मलिक शामिल है। अरविंद सिंह लवली शीला दीक्षित की सरकार में मंत्री रह चुके है।उनको पिछले साल अगस्त में दिल्ली कांग्रेस के पद पर नियुक्त किया गया था।

केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी, भाजपा महासचिव विनोद तावडे और दिल्ली भाजपा प्रमुख वीरेन्द्र सचदेवा की मौजूदगी में अरविंद सिंह लवली अपनी टीम के साथ भाजपा में शामिल हो गए। सभी कांग्रेस नेता पार्टी के द्वारा आम आदमी पार्टी से गठबंधन से खासे खफा थे। इसके अलावा पूर्वी दिल्ली से कन्हैया कुमार को टिकट दिए जाने से भी खफा थे। भाजपा में शामिल होने वाले नेताओ ने कहा कि कांग्रेस में अभी ऐसा वक्त है कि वे किसी की सुनते नही है। बल्कि पार्टी से नाराज नेताओं की बे अदबी पर राहुल का दो टूक जवाब देते है जो जा रहा है उसे जाने दो, उसे रोको मत ।वे नई पीढी तैयार कर रहे है, पता नहीं वे कौन से ख्यालों में है? लवली ने प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि हमें भाजपा के बैनर तले और प्रधानमंत्री के नेतृत्व में दिल्ली की जनता के लिए लडने का मौका दिया गया है। इसके लिए मैं शीर्ष नेतृत्व का धन्यवाद करता हूं।मुझे पूरी उम्मीद है कि देश में बहुमत से भाजपा की सरकार बनेगी।आने वाले दिनो में दिल्ली में भी भाजपा परचम लहराएगा।

'कांग्रेस पार्टी कतरे-कतरे से टुकड़े-टुकड़े पर आई', भाजपा ज्वाइन करते ही बदले अरविंद सिंह लवली के सुर; लगाए गंभीर आरोप

बीजेपी नेता अरविंद सिंह लवली ने कहा कि सभी जानते हैं कि किन परिस्थितियों में मैंने दिल्ली कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया था। उसके बाद मैं अपने समर्थकों और कई कांग्रेस कार्यकर्ताओं से मिला। उन्होंने मुझसे घर पर न बैठने और दिल्ली के लोगों के लिए लड़ने के लिए एक मजबूत पार्टी में शामिल होने का आग्रह किया।

नई दिल्ली। दिल्ली कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अरविंद सिंह लवली ने बीजेपी की सदस्यता शनिवार को ग्रहण कर ली। इससे पहले उन्होंने इस्तीफा देते हुए कहा था कि वह सिर्फ प्रदेश अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया है, कांग्रेस से नहीं। लेकिन आज अचानक वह बीजेपी मुख्यालय पहुंचे और केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी की मौजूदगी बीजेपी में शामिल हो गए। सदस्यता लेते ही उन्होंने कांग्रेस पर जमकर हमला बोला।

उन्होंने कहा कि सभी जानते हैं कि किन परिस्थितियों में मैंने दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया था। उसके बाद, मैं अपने समर्थकों और कई कांग्रेस कार्यकर्ताओं से मिला। उन्होंने मुझसे घर पर न बैठने और दिल्ली के लोगों के लिए लड़ने के लिए एक मजबूत पार्टी में शामिल होने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि देश के लिए कोई पार्टी काम कर रही है, तो वह भाजपा है। हम इस देश के लिए और लोगों की भलाई के लिए काम करने के लिए भाजपा में आए हैं।

18 साल की उम्र में कांग्रेस ज्वाइन की थी: लवली

उन्होंने कहा कि मैंने 18 साल की उम्र में कांग्रेस में शामिल हुए थे। तब इंदिरा गांधी ने कहा था कि मेरे शरीर का कतरा-कतरा देश के लिए हैं। अब कतरे-कतरे से कांग्रेस टुकड़े-टुकड़े पर आ गई है। इसलिए हमलोगों ने फैसला किया कि हमें घर बैठने के बजाय बीजेपी के साथ आना चाहिए। यह पार्टी देश को आगे बढ़ाने वाली पार्टी है। मैंने इस्तीफे की चिट्ठी में कई बातें गिनाई है। जो लोग अपने लोगों का ध्यान नहीं रखते, वह देश का क्या ख्याल रखेंगे।

किसी का अपने इलाके में कोई प्रभाव नहीं था: बाबरिया

लवली के बीजेपी में शामिल होने पर दिल्ली कांग्रेस के प्रभारी दीपक बाबरिया ने कहा- मैं इसे झटका नहीं मानता हूं। राजुकमार चौहान पहले भी पार्टी छोड़ी थी और फिर वापस आ गए थे। कोई बता दे कि इनमें से कोई एक भी व्यक्ति है, जिसका अपने इलाके में गहरा प्रभाव था। वह अपने पार्षद को विरोध के बावजूद जिता नहीं पा रहे थे। तो ऐसे में उनके सारे आरोप गलत हैं। लवली ने मुझपर जो बात नहीं सुनने के आरोप लगाए हैं, वह बिल्कुल गलत है।

दिल्ली में फूड डिलीवरी एजेंट की हत्या, गर्दन पर मिले चोट के निशान; घर में लहूलुहान पड़ा था शव

दिल्ली के नंगोली थाना क्षेत्र में एक फूड डिलीवरी एजेंट की हत्या का मामला सामने आया है। पुलिस को शव पर चोट के निशान मिले हैं। फॉरेंसिक विशेषज्ञों के साथ क्राइम टीम ने घटना स्थल का दौरा किया है। पुलिस के अनुसार मृतक की पहचान अमरजीत महतो (30) के रूप में हुई है। उसका शव नंगोली थाना क्षेत्र के राव विहार इलाके में स्थित उसके घर पर मिला है।

नई दिल्ली। दिल्ली के नंगोली थाना क्षेत्र में एक फूड डिलीवरी एजेंट की हत्या का मामला सामने आया है। पुलिस को शव पर चोट के निशान मिले हैं। फॉरेंसिक विशेषज्ञों के साथ क्राइम टीम ने घटना स्थल का दौरा किया है। पुलिस के अनुसार, मृतक की पहचान अमरजीत महतो (30) के रूप में हुई है। उसका शव नंगोली थाना क्षेत्र के राव विहार इलाके में स्थित उसके घर पर मिला है। मृतक की गर्दन पर चोट के निशान हैं।

पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए एसजी अस्पताल भेज दिया है। आईपीसी की धारा 302 के तहत मामला दर्ज किया जा रहा है। वारदात को सुलझाने की कोशिश की जा रही है।

कनॉट प्लेस में एन ब्लॉक के पास लावारिस बैग मिलने से मचा हड़कंप, जांच में अंदर से निकले कपड़े

सेंट्रल दिल्ली में कनॉट प्लेस के एन ब्लॉक के पास शनिवार को एक लावारिस बैग मिला। मामले की सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। इसके बाद वहां पर दमकल के साथ-साथ बम स्क्वॉड टीम को भेजा गया। जब कड़ी सुरक्षा के बीच बैग की तलाशी ली गई तो उसमें से कपड़े निकले। पुलिस सीसीटीवी की मदद से यह पता लगा रही है कि यह बैग किसने रखे।

नई दिल्ली। दिल्ली के स्कूलों में बम की अफवाह से लोग अभी उभरे भी नहीं है कि शनिवार को कनॉट प्लेस में दोपहर के समय लावारिस बैग मिलने से हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस, दमकल विभागकर्मी और बम डिटेक्शन टीम मौके पर पहुंच गई। इलाके को चारों तरफ से घेर लिया गया। जांच बाद बैग में कपडे.निकलने पर पुलिस ने राहत की सांस ली।

दिल्ली अग्निशमन सेवा को दोपहर 2.41 बजे कनॉट प्लेस के एन ब्लॉक में फुटपाथ के पास एक लावारिस बैग के बारे में काल आई और दो दमकल गाड़ियों को तुरंत भेजा गया। मौके पर पहुंच कर पुलिस ने बैग वाले स्थान को चारों तरफ से घेर लिया और लोगों को वहां से दूर कर आसपास खाली करा कर बैग के चारों तरफ बैरिकेटिंग कर दी गई।

जांच टीम ने जब बैग खोलकर बैग की जांच की तो उसमें कुछ संदिग्ध नहीं मिला। बैग में कुछ कपडे.रखे थे। ऐसी आशंका जताई जा रही है कि गलती से किसी का बैग छूट गया होगा। पुलिस पता कर रही है कि बैग किसका है।

अरविंद केजरीवाल और ममता बनर्जी के करीबियों ने किए बड़े राज से उठाया पर्दा, जाने क्या ?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अरविंद केजरीवाल और ममता बनर्जी के करीबियों द्वारा बड़े खुलासे। ममता पर आरोप है कि उन्हें पश्चिम बंगाल शिक्षक भर्ती घोटाले के बारे में पहले से पता था। लेकिन वो सब कुछ जानते हुए भी चुप रहीं। जबकि दिल्ली में गरीबों और आम आदमी की बात करने वाले अरविंद केजरीवाल पर उनके करीबी ही आरोप लगा रहे हैं कि उन्होंने सफाई कर्मचारियों की सैलरी रोक कर रखी। दिल्ली सरकार में मंत्री रहे राजकुमार आनंद ने केजरीवाल सरकार को लेकर कई खुलासे किए हैं। उन्होंने कहा कि केजरीवाल ने दिल्ली के सफाई कर्मचारियों की सैलरी रोक कर रखी। इसके अलावा केजरीवाल ने चुनाव से पहले सफाई कर्मचारियों को परमानेंट करने का वादा किया था। वो भी पूरा नहीं किया। आपको जानकर हैरानी होगी की सैलरी नहीं मिलने की वजह से कई सफाई कर्मचारियों ने आत्महत्या तक कर ली। लेकिन केजरीवाल का दिल नहीं पिघला। याद करें अरविंद केजरीवाल की प्रेस कॉन्फ्रेंस की तस्वीरों को तो हमेशा उसमें आपको भगत सिंह और बाबा साहब आंबेडकर की फोटो पीछे की तरफ दिख जाएगी। ये दोनों ही गरीबों और पिछड़ों की हक की बात करते थे। लेकिन दिल्ली के गरीब और दलित सफाई कर्मियों का हक मारने का आरोप उनके ही करीबी लोग लगा रहे हैं। उनकी सरकार में मंत्री रहे राजकुमार आनंद ने कई हैरान करने वाले खुलासे किए हैं। दिल्ली सरकार में समाज कल्याण और अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण मामलों के मंत्री रह चुके हैं। उनके अनुसार केजरीवाल ने दिल्ली सरकार में अलग अलग विभागों में सफाई कर्मचारियों की जानबूझकर परमानेंट की बजाए ठेके पर अप्वाइंटमेंट की। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि रिजर्वेशन के नियमों का पालन न करना पड़े।

ममता सरकार पर टीएमसी का बड़ा खुलासा बंगाल में टीएमसी के नेता कुणाल घोष ने शिक्षक भर्ती घोटाले में हैरान करने वाले खुलासे किए हैं। कुणाल घोष के अनुसार टीएमसी के नेताओं को इस बात की पूरी जानकारी थी कि स्कूल शिक्षा विभाग में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और नौकरियों के नाम पर जबरन वसूली हो रही थी। पार्टी को 2021 के विधानसभा चुनावों से पहले ही इसकी जानकारी थी। पूर्व महासचिव कुणाल घोष ने यह भी दावा किया कि इस भ्रष्टाचार और जबरन वसूली की जानकारी के कारण ही पश्चिम बंगाल के पूर्व मंत्री पार्थ चटर्जी को 2021 विधानसभा चुनाव में पार्टी की जीत के बाद शिक्षा मंत्रालय से उद्योग विभाग में स्थानांतरित कर दिया गया था। पार्थ चटर्जी की गिरफ्तारी के बाद पार्टी ने इससे पल्ला झाड़ते हुए कह दिया था कि उन्हें इस सब के बारे में पता ही नहीं था।

आम आदमी पार्टी ने जारी की स्टार प्रचारकों की लिस्ट, केजरीवाल और उनकी पत्नी समेत ये हैं 40 नाम

आम आदमी पार्टी (AAP) ने दिल्ली में लोकसभा चुनावों के लिए अपने स्टार कैंपेनर (प्रचारकों) की लिस्ट जारी कर दी है। जिनमें 40 पार्टी नेताओं के नाम हैं। प्रचारकों की लिस्ट में सबसे पहला नाम पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का नाम है। इनके बाद उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल भी है। ये सभी स्टार प्रचारक दिल्ली के लिए हैं।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (AAP) ने दिल्ली में लोकसभा चुनावों के लिए अपने स्टार कैंपेनर (प्रचारकों) की लिस्ट जारी कर दी है। जिनमें 40 पार्टी नेताओं के नाम हैं। प्रचारकों की लिस्ट में सबसे पहला नाम पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का नाम है। इनके बाद उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल भी है।

ये सभी स्टार प्रचारक दिल्ली के लिए हैं। बता दें कि दिल्ली में लोकसभा चुनाव छठे चरण 25 मई को हैं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी सात में चार लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ रही है। बाकी की तीनों सीटों पर कांग्रेस लड़ रही है। दोनों पार्टियों ने दिल्ली में लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन किया है।

इन चार सीटों पर हैं आप प्रत्याशी

नई दिल्ली सीट- सोमनाथ भारती

पूर्वी दिल्ली- कुलदीप कुमार

दक्षिणी दिल्ली- सहीराम पहलवान

पश्चिमी दिल्ली- महाबल मिश्रा

ये हैं स्टार प्रचारकों के नाम

अरविंद केजरीवाल
सुनीता केजरीवाल
भगवान सिंह मान
मनीष सिसोदिया
संजय सिंह
डॉक्टर संदीप पाठक
पंकज कुमार गुप्ता
एनडी गुप्ता
गोपाल राय
राघव चड्ढा
सत्येंद्र जैन
आतिशी
सौरभ भारद्वाज
कैलाश गहलोत
इमरान हुसैन
स्वाति मालीवाल
राखी बिड़लान
हरपाल सिंह चीमा
अमन अरोरा
अनमोल गगन मान
चेतन सिंह
हरजोत सिंह बैंस
बालकार सिंह
दिलीप पांडे
दुर्गेश पाठक
जितेंद्र सिंह तोमर,
जरनैल सिंह
ऋतुराज झा
राजेश गुप्ता
गुलाब सिंह यादव
संजीव झा
मुकेश अहलावत
डॉक्टर शैली ओबेरॉय
पंकज गुप्ता (भैया जी
सारिका चौधरी
विशेष रवि
अखिलेश पति त्रिपाठी
अमानतुल्लाह खान
डॉक्टर निम्मी रस्तोगी
अंजली राय

Aam Aadmi Party
295, House Avenue, Deen Dayal Upadhyay Marg, New Delhi - 110002
Phone: +91 9716500606, 9818500606, Email: info@aamaadmiparty.org

To,
The Secretary
Election Commission of India
Nirvachan Sadan,
New Delhi

04 MAY 2024

Dated: 04.05.2024

Sub:- List of the Star Campaigners for the General Election 2024 to Lok Sabha-NCT of Delhi.

Sir,

We are hereby submitting the list of **Star Campaigners** on behalf of the Party for the General Election 2024 to Lok Sabha for NCT of Delhi (State).

1. Arvind Kejriwal
2. Sunita Kejriwal
3. Bhagwant Singh Mann
4. Manish Sisodia
5. Sanjay Singh
6. Dr. Sandeep Pathak
7. Pankaj Kr. Gupta
8. N D Gupta
9. Gopal Rai
10. Raghav Chadha
11. Satyender Jain
12. Atishi
13. Saurabh Bhardwaj
14. Kailash Gehlot
15. Imran Hussain
16. Swati Maliwal
17. Rakhi Birlan
18. Harpal Singh Cheema
19. Aman Arora
20. Anmol Gagan Maan
21. Chetan Singh Jormajra
22. Harjot Singh Bains
23. Balkar Singh
24. Dilip Pandey
25. Durgesh Pathak
26. Jitender Singh Tomar
27. Jarnail Singh
28. Rituraj Jha
29. Rakesh Gupta
30. Gulab Singh Yadav
31. Sanjeev Jha
32. Mukesh Ahlawat
33. Dr. Shelly Oberoi
34. Pankaj Gupta (Bhaiya-ji)
35. Sarika Chaudhary
36. Vishesh Ravi
37. Akhilesh Pati Tripathi
38. Amanatullah Khan
39. Dr. Nimmi Rastogi
40. Anjali Rai

Kindly approve the same.

Yours sincerely,

Bipul Dey
Nodal Person with EC
AAM AADMI PARTY

Copy: C E O – NCT of Delhi

ईएसआईसी अस्पताल के हजारो कर्मचारी 8 से 11 मई तक लंबित पडी मांगों पर करेगें विरोध प्रदर्शन

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

नई दिल्ली। ऑल इंडिया लेबल पर ईएसआईसी अस्पताल के हजारों कर्मचारी प्रशासन के खिलाफ अलाईड हेल्थ एंड केयर प्रोफेशनल्स पेरामेडिकल स्टाफ से संबंधित असें से लंबित पडी अपनी 18 मांगों को लेकर तमाम कर्मचारियों द्वारा 8 से 11 मई चार दिनों तक विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

इस बावत ऑल इंडिया ईएसआईसी (मेडिकल) इंप्लाइज फेडरेशन के सेकेट्री जनरल किशन चंद ने प्रेस को बताया कि फेडरेशन ईएसआईसी अस्पतालों में कार्यरत अलाईड हेल्थ एंड केयर प्रोफेशनल्स पैरामेडिकल स्टाफ की असें से लंबित मांगों को लेकर 8 मई से 11 मई तक ईएसआईसी प्रशासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करेगी। इस दौरान शांति पूर्ण विरोध प्रदर्शन के तहत तमाम कर्मचारी अपनी बाजू में काली पट्टियां बांधकर काम को अंजाम देगे। इस दरमियान अस्पताल के कार्यो में कोई बाधा नही की जाएगी।

फेडरेशन के जर्नल सेकेट्री किशन चंद ने बताया कि पूरे भारत में चालित ईएसआईसी अस्पताल, डिस्पेंसरियों में कार्यरत हजारों कर्मचारी जिनमें, लेब टेक्निशियन, नर्सिंग स्टाफ, ऑपरेशन थिएटर, इसीजी, सीएसएसडी स्टाफ समेत किचन तक के कर्मचारी प्रशासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन में शामिल रहेगें। फेडरेशन का कहना है कि मेन मुद्दा स्टाफ नॉर्म्स को लेकर है। कडे संघर्ष के बाद साल 2002 में स्टाफ नॉर्म्स तो बनाए गए। फरवरी, 2024 में इन्हें अपडेट भी किया गया। लेकिन ताज्जुब है कि सेंकशन स्ट्रेंग्थ को अब तक लागू नहीं किया गया। वहीं सर्विस कंडीशन 2022 को भी पेंडिंग रखा जा रहा है। इसके अलावा एमएसईबी के तहत सैंकडों कर्मचारियों के बेनिफिट तक नहीं दिए गए हैं। इनमें रिटायर्ड या ड्यूटी के दौरान डेथ कर गए स्टाफ को मिलने वाले लाभ तक से वंचित रखा जा रहा है। नई दिल्ली स्थित ईएसआईसी बसई दारापुर अस्पताल के यूनियन लीडर सुनील सरकनिया के मुताबिक बसई अस्पताल प्रशासन के सैंकडो प्रभावित स्टाफ विरोध स्वरूप बाजू पर काली पट्टियां बांधकर 8 से 11 मई तक प्रदर्शन में शामिल रहेगें।

कुत्ता पालने वाले हो जाएं सावधान, एक गलती और...

भुगतना पड़ सकता है नुकसान; इस महिला को देना पड़ा भारी जुर्माना

गाजियाबाद निगम अधिकारियों ने जर्मन शेफर्ड नस्ल का कुत्ता पालने वाली महिला को नोटिस जारी किया था। पंजीकरण न कराने के चलते उन पर 10 हजार रुपये का जुर्माना लगाया। शुक्रवार को महिला ने जुर्माना राशि जमा कराई। कुत्तों का रजिस्ट्रेशन न कराने पर एक अप्रैल से जुर्माना राशि बढ़ाई गई है। बढ़ी हुई जुर्माना राशि के तहत जुर्माना वसूलने की यह पहली कार्रवाई है।

गाजियाबाद। राजनगर एक्सटेंशन स्थित अजनारा इंटीग्रिटी सोसायटी में गत 27 अप्रैल को छह साल की मासूम बच्ची पर हमला करने वाले कुत्ते का रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ था। नगर निगम की जांच में यह बात सामने आने के बाद निगम अधिकारियों ने जर्मन शेफर्ड नस्ल का कुत्ता पालने वाली महिला को नोटिस जारी किया था।

पंजीकरण न कराने के चलते उन पर 10 हजार रुपये का जुर्माना लगाया। शुक्रवार को महिला ने जुर्माना राशि जमा कराई। कुत्तों का रजिस्ट्रेशन न कराने पर एक अप्रैल से जुर्माना राशि बढ़ाई गई है। बढ़ी हुई जुर्माना राशि के तहत जुर्माना वसूलने की यह पहली कार्रवाई है।

निगम के उप-मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर अनुज कुमार सिंह ने बताया कि नई नीति के तहत कुत्तों का पंजीकरण शुल्क एक हजार रुपये है। वहीं हर साल किए जाने वाला नवीनीकरण शुल्क 500 रुपये है जबकि बिना पंजीकरण के कुत्ता पालने पर 10 हजार रुपये जुर्माना लगाने का नियम है।

पालतू कुत्तों की संख्या करीब 20 हजार से ज्यादा

मालूम हो कि निगम क्षेत्र में पालतू कुत्तों की संख्या करीब 20 हजार से ज्यादा होने का अनुमान है। मगर अभी तक निगम में सिर्फ छह हजार कुत्तों का ही पंजीकरण हुआ है। प्रतिबंधित नस्ल के कुत्तों को पालने व प्रजनन पर भी 10 हजार रुपये ही जुर्माना का प्रविधान है, जो लोग प्रतिबंधित नस्ल के कुत्तों को पहले से पाल रहे हैं उन्हें उन कुत्तों की अनिवार्य रूप से नसबंदी करानी जरूरी है।

देश में कुत्ते के कुल 23 नस्ल पर प्रतिबंध

नसबंदी कराने के बाद प्रमाणपत्र अनिवार्य रूप से निगम कार्यालय में जमा कराना होगा। निगम अधिकारियों की माने तो कुत्तों की पिटबुल, टेरियर, राटविलर, टोसा इनु, अमेरिकन स्टैफोर्डशायर, फिला ब्रासीलीरो, डोगो अर्जेंटीनो, अमेरिकन बुलडाग, बोएरबोएल, कांगल, मध्य एशियाइ शेफर्ड डाग, दक्षिण रूसी शेफर्ड, कोकेशियान शेफर्ड डाग, सप्लीनिनैक, जापानी टोसा, मास्टिफ्स आदि कुल 23 नस्ल पर प्रतिबंध है।

हमला करने की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद

कुछ ऐसे कुत्ते जो बीमार हैं या फिर देसी नस्ल के हैं। उनका रजिस्ट्रेशन निशुल्क किया जा रहा है। पीएफए, आरडब्ल्यूए और एओए के सहयोग से रजिस्ट्रेशन को बढ़ाने और टीकाकरण पर तेजी से काम चल रहा है। मालूम हो कि अजनारा इंटीग्रिटी सोसायटी में पालतू कुत्ते द्वारा बच्ची पर हमला करने की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई थी। बच्ची के हाथ, कमर पर कुत्ते के काटने व पंजा मारने के घाव हो गए थे। पीड़ित बच्ची की मां ने मामले में नंदग्राम थाने में शिकायत दर्ज कराई थी।

सेप्टिक टैंक की सफाई करने नाले में उतरे तो घुटने लगा दम, कड़ी मशक्कत के बाद निकाला बाहर; नहीं बच सकी दोनों की जान

नोएडा कोतवाली सेक्टर-20 क्षेत्र के सेक्टर-26 स्थित एक घर में सेप्टिक टैंक सफाई के दौरान शुक्रवार देर रात दम घुटने से दो लोगों की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक सेक्टर-26 के सुमित चावला ने सेप्टिक टैंक की सफाई के लिए शुक्रवार शाम दो लोगों को बुलाया।

नोएडा। नोएडा कोतवाली सेक्टर-20 क्षेत्र के सेक्टर-26 स्थित एक घर में सेप्टिक टैंक सफाई के दौरान शुक्रवार देर रात दम घुटने से दो लोगों की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के मुताबिक, सेक्टर-26 के सुमित चावला ने सेप्टिक टैंक की सफाई के लिए शुक्रवार शाम दो लोगों को बुलाया। सेक्टर-9 जेजे कॉलोनी में रहने मूलरूप से बंगाल के मालदा जिले के नूनी मंडल व तपन मंडल पहुंच गए।

जैसे ही दोनों सेप्टिक टैंक में सफाई करने उतरे तो उनका दम घुटने लगा। देखते ही देखते दोनों जहरीली गैस के चपेट में आ गए।

उपचार के दौरान हुई मौत

किसी तरह दोनों को बाहर निकाला गया और कैलाश अस्पताल पहुंचाया गया। जहां देर रात उपचार के दौरान दोनों ने दम तोड़ दिया।अस्पताल से मिली सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। एसीपी प्रवीण कुमार सिंह का कहना है कि शवों को पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। मृतक पक्ष की ओर से कोई शिकायत नहीं नहीं दी गई है। शिकायत मिलती है तो जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

नेहरू नगर में निर्माणाधीन रेस्तरां में लगी आग, आठ लोग मौजूद थे और फिर...

गाजियाबाद के नेहरू नगर थर्ड डी ब्लाक में स्थित एक निर्माणाधीन रेस्तरां शुक्रवार देर रात आग लग गई। आग कुछ ही देर में तेजी से फैल गई। हादसे के समय इमारत के प्रथम तक पर स्थित दो फ्लैट में रहने वाले आठ लोग मौजूद थे। घटना की सचूना दमकल विभाग को दी गई सूचना मिलते ही दमकल के अधिकारी मौके पर पहुंचे और आग पर काबू पाया गया।

गाजियाबाद। शुक्रवार देर रात नेहरू नगर थर्ड डी ब्लाक में भूतल पर आग लग गई। हादसे के समय इमारत के प्रथम तक पर स्थित दो फ्लैट में रहने वाले आठ लोग मौजूद थे। आग लगते ही सभी लोग पार्किंग की तरफ से नीचे सुरक्षित उतर आए। इमारत के भूतल पर रेस्तरां बनाने की जानकारी सामने आई है। बाद में आग पर काबू पा लिया गया।

रात करीब 11 रेस्तरां में लगी आग

राजनगर निवासी प्रतीक गोयल की नेहरू नगर थर्ड डी में दो मंजिला इमारत है। इमारत के प्रथम और द्वितीय तल पर फ्लैट बने हुए हैं। शुक्रवार देर रात करीब 11 बजे भूतल पर बन रहे रेस्तरां में आग लग गई।

हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ

आग कुछ ही देर में तेजी से फैली। एफएसओ कोतवाली शेषनाथ यादव का कहना है कि रात करीब 11:15 बजे दमकल को सूचना मिलने के बाद दो गाड़ी मौके पर भेजी गईं। हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ है। आग लगने की वजह शुरुआती जांच में शार्ट सर्किट लग रही है।

डिजिटल अरेस्ट कर महिला बैंक अधिकारी से ठगे 18 लाख, फर्जी पुलिस अधिकारी बनकर लगाया चूना

डीसीपी साइबर क्राइम सिद्धांत जैन ने बताया कि शुक्रवार को साइबर थाना ईस्ट में महिला की ओर से धोखाधड़ी की शिकायत मिली। सेक्टर 53 निवासी महिला ने बताया कि वह बैंक में नौकरी करती हैं। गुरुवार को उनके मोबाइल फोन पर एक काल आया। फोन करने वाले ने अपने आप को फीडेक्स कूरियर कंपनी से बताया। इसके बाद उससे 18 लाख की ठगी कर ली गई।

गुरुग्राम। साइबर ठगों ने फर्जी पुलिस अधिकारी बनकर गुरुग्राम के सेक्टर 53 में रहने वाली एक महिला बैंक अधिकारी को झांसे में लिया। मनी लांड्रिंग, ह्यूमन ट्रैफिकिंग व ड्रग्स आदि में संलिप्तता का भय दिखाते हुए डिजिटल अरेस्ट कर उनसे 18 लाख रुपये की ठगी कर ली। महिला की शिकायत पर साइबर पुलिस ने चार खातों में गई 12 लाख 60 हजार रुपये की राशि फ्रीज करा दी है।

डीसीपी साइबर क्राइम सिद्धांत जैन ने बताया कि शुक्रवार को साइबर थाना ईस्ट में महिला की ओर से धोखाधड़ी की शिकायत मिली। सेक्टर 53 निवासी महिला ने बताया कि वह बैंक में नौकरी करती हैं। गुरुवार को उनके मोबाइल फोन पर एक काल आया। फोन करने वाले ने अपने आप को फीडेक्स कूरियर कंपनी से बताया।

आरोपी ने महिला को स्काइप से किया वीडियो कॉल

उसने कहा कि उनके नाम का एक कूरियर थाईलैंड जा रहा है। उसमें पांच पार्सपोर्ट, तीन क्रेडिट कार्ड, एक किलो एमडीएमए ड्रग्स है। उसके बाद आरोपित ने कथित रूप से कॉल मुंबई साइबर सेल में ट्रांसफर कर दी। पहले फोन पर बात हुई इसके बाद महिला को स्काइप के माध्यम से वीडियो कॉल कर बताया गया कि उनका बैंक में फर्जी खाता खुला हुआ है और उस बैंक खाते में बड़ी-बड़ी ट्रांजेक्शन हुई है।

ह्यूमन ट्रैफिकिंग का दिखाया भय

मनी लॉन्ड्रिंग, ह्यूमन ट्रैफिकिंग और ड्रग्स इत्यादि में संलिप्तता का भय दिखाते हुए गिरफ्तार करने की बात कही। इसी दौरान आरोपितों ने आरबीआइ बैंक से वेरिफिकेशन कराने के नाम पर महिला से 18 लाख रुपये ट्रांसफर करा लिए। उन्होंने कहा कि कुछ देर में यह राशि वापस कर दी जाएगी, लेकिन इसके बाद उनका फोन बंद आने लगा।

पहले ठगी की राशि एक खाते में गई

महिला की शिकायत पर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए उन बैंक खातों को होल्ड कराया, जिसमें ठगी की राशि गई थी। डीसीपी ने बताया कि पहले ठगी की राशि एक खाते में गई। इसके बाद यहां से तीन अन्य खातों में भेजी गई। पुलिस 12 लाख 60 हजार रुपये फ्रीज कराने में सफल रही। पुलिस टीम मामले से संबंधित जानकारी एकत्रित करने में जुटी है। जल्द ही आरोपितों को पकड़ लिया जाएगा।

लोकसभा चुनावों में धराशायी विपक्ष के टूलकिट आधारित मुद्दे !

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने बयान जारी कर राहुल गांधी के सभी आरोपों को मिथ्या बताया। महासचिव चंपत राय ने बताया कि राहुल गांधी को स्मरण कराना चाहूंगा कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू एवं पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद दोनों को रामलला के मूल विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आमंत्रित किया गया था।

मृत्युंजय दीक्षित

स्वतंत्रता के बाद भारत में अभी तक जितने भी लोकसभा या विधानसभा चुनाव संपन्न हुए हैं उनमें पहली बार कांग्रेस के नेतृत्व में बना गठबंधन हर दृष्टि से कमजोर नजर आ रहा है। जब से लोकसभा चुनावों के लिए कांग्रेस व इंडी गठबंधन के नेताओं ने प्रचार आरम्भ किया है तभी से कांग्रेस नेता राहुल गांधी व उनके प्रवक्ता मीडिया एजेंसियों व टीवी चैनलो पर बैठकर केवल एक ही बहस कर रहे हैं कि अगर मोदी जी तीसरी बार 400 सीटों के साथ प्रधानमंत्री बन जाते हैं तो फिर भाजपा संविधान को फाड़ कर फेंक देगी, दोबारा चुनाव नहीं होंगे क्योंकि इनके पास कोई मुद्दा नहीं है मोदी जी को घेरने का। इसके अतिरिक्त मोदी जी और अमित शाह के एआई द्वारा बनाए गए डीप फेक वीडियो या फिर सम्पादित/ डॉक्टर्ड वीडियो को आधार बनाकर झूठ फैला रहे हैं।

पिछले दिनों अमित शाह के ऐसे ही एक वीडियो के साथ आरक्षण के सम्बन्ध में दुष्प्रचार किया गया हालांकि अब इस पर दिल्ली पुलिस ने कार्यवही आरम्भ कर दी है और कई लोग गिरफ्तार किए जा चुके हैं। उधर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस फर्जी वीडियो प्रकरण को को अपने पक्ष में मोड़कर मुद्दा बनाने मे कुछ हद तक सफलता प्राप्त कर ली है साथ ही वे संविधान और आरक्षण के नाम पर विगत 70 साल में पिछली सरकारों ने जो किया उसे भी बेनकाब कर रहे हैं।

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार आने के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खिलाफ आरक्षण विरोधी होने का दावा कर अभियान चलाया जा रहा है। बिहार में 2015 के विधानसभा चुनावों में नीतीश कुमार और लालू यादव के बीच गबठबंधन हुआ था तब इन दलों ने पांचजन्य साप्ताहिक में प्रकाशित एक साक्षात्कार के आधार पर संघ के खिलाफ विषवमन किया था। बसपा नेत्री मायावती ने एक पुस्तिका प्रकाशित करवा के घर घर तक बंटवाई थी और बताया गया था कि संघ किस प्रकार से आरक्षण विरोधी है।

अब समय बदल चुका है यह 2024 की बदली हुई भाजपा और संघ है जो दुष्प्रचार के प्रति पूरी तरह सतर्क और सशक्त है। इस बार कांग्रेस नेताओं का यह दांव जमीनी धरातल पर नहीं उतर पा रहा है क्योंकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि संघ हमेशा संविधान सम्मत आरक्षण का पक्षधर रहा है। संघ का मानना है कि जब तक सामाजिक भेदभाव रहेगा या आरक्षण देने के कारण बने रहेंगे तब तक आरक्षण जारी रहे।संघ प्रमुख ने कहा कि उन्होंने एक वीडियो के बारे में सुना है जिसमें कहा गया है कि संघ आरक्षण के खिलाफ है। संघ आरक्षण का कभी विरोधी नहीं रहा है किंतु यह उसके खिलाफ विमर्श स्थापित किया जा रहा है क्योंकि कांग्रेस को लगता है कि संघ व भाजपा को आरक्षण व संविधान विरोधी साबित कर वह चुनावी किला फतह कर सकती है।

राहुल गांधी आजकल भाजपा को संविधान विरोधी साबित करने में दिन-रात एक किये हुए है जबकि वास्तविकता यह है कि अगर आज आम नागरिक अपने संविधान को जान रहा है, पढ़ रहा है और उसके अनुरूप आचरण करना चाह रहा है और उसके पीछे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयास ही हैं क्योंक अब हर वर्ष 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया जा रहा है। भारतीय संविधान को अब वेबसाइट पर आसानी से पढ़ा जा सकता है। नए संसद भवन के उद्घाटन और सेंगोल स्थापना के अवसर पर सदन के सदस्यों को भी संविधान की मूल प्रति दी गई।

कांग्रेस जो आज संविधान- संविधान का राग अलाप रही है संविधान का सत्यानाश कांग्रेस ने ही किया था। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता बचाने के लिए संविधान में मूल भूत परिवर्तन करके उसमें धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी जैसे शब्द जोड़कर उसकी आत्मा ही नष्ट कर दी, आपातकाल लगाकर अपनी विकृत तानाशाही मानसिकता का परिचय दिया और मनमर्जी से विपक्षी दलों की प्रदेश सरकारों को गिराया। कांग्रेस के कार्यकाल में संविधान एक परिवार का बंधक हो गया था व एक धर्म विशेष का तुष्टीकरण कर रहा था।

इसी प्रकार कांग्रेस अयोध्या में प्रभु राम की जन्मभूमि और उस पर बन रहे भव्य मंदिर के प्रति भी नकारात्मक रही है। जन जन के आराध्य प्रभु राम को काल्पनिक कहने वाली कांग्रेस ने पहले तो मुद्दे को भटकाने, लटकाने, अटकाने के लिए जी जान लगा दी फिर भी

असफल रहने पर अपने मुस्लिम तुष्टीकरण को मजबूती प्रदान कनने के लिए प्राण प्रतिष्ठा समारोह का बहिष्कार किया। उसके बाद राहुल गांधी व विपक्ष के नेता जनसभाओं में बयान देने लगे कि राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में दलित आदिवासी होने के कारण राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को नहीं बुलाया गया। यह भी बयान दिए जाने लग गये कि प्राण प्रतिष्ठा समारोह में केवल और केवल बड़े उद्योगपति और बड़े घरानो के लोग ही उपस्थित रहे आम जनता को कोई भाव नहीं दिया गया। पिछले दिनों राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अयोध्या में रामलला के दर्शन करके ने राहुल गांधी के इस झूठ का करारा उत्तर दे दिया। राम मंदिर के गर्भगृह में राष्ट्रपति की उपस्थिति ने कांग्रेस नेता के आरोप को बुरी तरह से धो डाला। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गर्भगृह में पहुंचकर रामलला का विधिवत पूजन किया। आराध्य को निकट से देखकर राष्ट्रपति बहुत भावुक दिखीं और उन्होंने सोशल मीडिया पर अपने अनुभव भी साझा किए।

इस बीच श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने बयान जारी कर राहुल गांधी के सभी आरोपों को मिथ्या बताया। महासचिव चंपत राय ने बताया कि राहुल गांधी को स्मरण कराना चाहूंगा कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू एवं पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद दोनों को रामलला के मूल विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आमंत्रित किया गया था। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग समाज से जुड़े हुए संत, महापुरुष गृहस्थजन और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में यश प्राप्त करने वाले भारत का गौरव बढ़ाने वाले लोगों को भी आमंत्रित किया गया था। मंदिर में सेवारत श्रमिक और अल्पसंख्यक समुदाय के लोग भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। राहुल गांधी अपनी जनसभाओं मे यह आरोप भी लगा रहे हैं कि वहां कोई गरीब, महिला, किसान युवा दर्शन नहीं करने गया अब यह भी झूठ हो गया है क्योंकि अब तक दो करोड़ से अधिक लोग राम मंदिर के दर्शन कर चुके हैं और इसमें समाज के सभी वर्गो की आम जनता ही शमिल है किंतु राहुल के पदचिन्हों पर चलने वाले कांग्रेस के प्रवक्ता अभी भी बाज नहीं आ रहे हैं और अयोध्या मंदिर व दर्शन कार्यक्रम को इवेंट बताकर उसका अपमान कर रहे है।

इसके अलावा कांग्रेस और विपक्ष बार-बार ईवीएम मसहीनों पर ही संदेह पैदा कर रहा है किंतु ईवीएम यह दावा अब सुप्रीम कोर्ट में भी खारिज हो चुका है। पहले दो चरणों में कम मतदान का हवाला देकर विरोधी दलों ने सोशल मीडिया पर हल्ला मचाना प्रारम्भ कर दिया कि कम मतदान का मतलब है मोदी जी हार गये, हार गये। किंतु जब चार दिन बाद चुनाव आयोग ने मतदान प्रतिशत के अंतिम आंकड़े सार्वजनिक किये तो विपक्ष एक बार फिर ईवीएम और चुनाव आयोग पर संदेह करने लग गया। विपक्षी दलों के नेता सोशल मीडिया पर आकर ईवीएम-ईवीएम करने लगे और कहा कि चुनाव आयेग ने खेल कर दिया- खेल कर दिया।

इसी राजनैतिक गहमा गहमी के बीच एस्ट्राजेनेका आक्सफोर्ड की कोरोना वैक्सीन कोविडशील्ड को लेकर विपक्ष ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की छवि को खराब करने का अभियान प्रारम्भ कर दिया । इस आभासी मुद्दे को टूलकिट के नए टूल के रूप में सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मो पर उठाया जा रहा है। कोविडशील्ड के प्रकरण में जनहित याचिका दायर करने वाले दलाल भी सक्रिय हो गये हैं और सुप्रीम कोर्ट पहुंच गये हैं जबकि वास्तविकत यह है कि कोविडशील्ड से नुकसान बहुत ही कम हुआ है जबकि लाभ अधिक हुआ है। कोविडशील्ड को लेकर उठ रहे सभी विवाद पूरी तरह से भ्रामक खबरो पर आधारित हैं। विशेषज्ञों का मत है कि हर वैक्सीन के साइड इफैक्ट होते ही हैं। वह वैक्सीन लगाने के 21 दिन या एक महीने के भीतर ही हो सकता था। कोविड काल में दो वर्ष पूर्व लगे इस वैक्सीन से कोई नुकसान नहीं अपितु लाभ ही हुआ है।

अभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लातूर की जनसभा में कहा कि 2014 के पहले एक समय था जब खबर आती थी कि, "सड़क पर पड़ी कोई भी लावारिस वस्तु को आप लोग न छुएं यह बम हो सकता है किंतु अब एक ऐसी खबरें आनी बंद हो गयी है" ठीक उसके अगले ही दिन सुबह - सुबह दिल्ली के स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी आती है और विरोधी दल आनंदमग्न होकर उस पर अपनी विकृत राजनीति प्रारम्भ कर देते हैं किंतु बाद में वह फर्जी अफवाह निकलती है हालांकि प्रकरण की अभी जांच चल रही है और हो सकता है कि यह विपक्ष की ही करतूत रही हो। कुछ ऐसी ही विकृत राजनीति कर्नाटक के एक सैक्स स्कैंडल को लेकर देखने को मिल रही है विरोधी दल उसमें भी भाजपा की छवि खराब करने का प्रयास कर रहे थे। कर्नाटक का सैक्स स्कैंडल कांग्रेस के शासनकाल में ही हुआ है। इसमें यह भी महत्वपूर्ण है कि कर्नाटक में कांग्रेस के अपने ही नेता की बेटी के साथ लव जिहाद की बर्बर घटना होने जाने के बाद कांग्रेस तुष्टीकरण के कारन मौन रही और जब भाजपा ने इसका विरोध किया, परिवार के साथ आगे बढ़ी तो सेक्स स्कैंडल को लेकर हल्ला मचा दिया गया।

आज की भाजपा अब 2014 के पहले वाली भाजपा नहीं रही कि उसे झूठे नैरेटिव चलाकर डराया, धमकाया या हराया जा सकता है। अब भजपा नेता हर बात के लिए सतर्क रहते हैं। गुजरात के एक सांसद रूपाला के बयान के बाद नैरेटिव चलाया गया कि राजपूत और क्षत्रिय भाजपा से नाराज हो गये हैं किंतु गुजरात में मोदी व भाजपा नेताओं की जनसभाओं में जैसी भीड़ आ रही है उससे लग रहा है कि राजपूत व क्षत्रियों की भाजपा से नाराजगी का नैरेटिव भी छिन्न भिन्न हो चुका है।

इंडियन ऑटो मार्केट में गुलजार होगा कॉम्पेक्ट एसयूवी सेगमेंट, जल्द एंट्री मारेंगी ये 4 नई गाड़ियां

टाटा मोटर्स आने वाले महीनों में Nexon का सीएनजी वर्जन लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। हुंडई वेन्यू की दूसरी पीढ़ी अगले साल आएगी जो जनरल मोटर्स से प्राप्त तालेगांव प्लांट में प्रोड्यूस होने वाला कंपनी का पहला प्रोडक्ट होगा। स्कोडा ने कुछ समय पहले घोषणा की थी कि भारतीय बाजार के लिए उसकी बेसब्री से प्रतीक्षित कॉम्पैक्ट एसयूवी मार्च 2025 तक लॉन्च होगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। इंडियन ऑटो मार्केट में Compact SUVs की मांग लगातार बढ़ रही है। इस बात को ध्यान में रखते हुए इंडियन कार मेकर्स भी कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। आइए, निकट भविष्य में लॉन्च होने वाली ऐसी कारों के बारे में जान लेते हैं।

Tata Nexon CNG

टाटा मोटर्स आने वाले महीनों में Nexon का सीएनजी वर्जन लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। Tata Nexon CNG को पहली बार Bharat Mobility Global Expo में पेश किया गया था। ट्विन सिलेंडर टेक्नोलॉजी की मदद से इसे बेहतरीन बूट स्पेस मिलने वाला है।

Skoda Compact SUV

स्कोडा ने कुछ समय पहले घोषणा की थी कि भारतीय बाजार के लिए उसकी बेसब्री से प्रतीक्षित कॉम्पैक्ट एसयूवी मार्च 2025 तक लॉन्च होगी। इसे MQB A0 IN आर्किटेक्चर पर बनाया जाएगा। कॉम्पैक्ट एसयूवी स्कोडा की कुशाक मिडसाइज एसयूवी के साथ कई कंपोनेंट और फीचर्स शेयर करेगी। नई सब-फोर-मीटर एसयूवी 1.0 लीटर, 3-सिलेंडर टर्बो पेट्रोल इंजन से लैस होगी, जो 115 पीएस और 178 एनएम टॉर्क पैदा करने में सक्षम है। इसे मैनुअल या ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प के साथ जोड़ा जाएगा।

2025 Hyundai Venue

हुंडई वेन्यू की दूसरी पीढ़ी अगले साल आएगी, जो जनरल मोटर्स से प्राप्त तालेगांव प्लांट में प्रोड्यूस होने वाला कंपनी का पहला प्रोडक्ट होगा। आंतरिक रूप से Q2Xi के रूप में जानी जाने वाली 2025 हुंडई वेन्यू को एक्सटीरियर और इंटीरियर में कई डिजाइन अपडेट मिलने वाले हैं।

Kia Clavis

Kia Clavis भारतीय बाजार के अंदर 2025 की शुरुआत में लॉन्च होने वाली है, जो समय के साथ ICE, हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वेरिएंट सहित कई पावरट्रेन विकल्पों में मौजूद हो सकती है। 2025 की दूसरी छमाही में इसका इलेक्ट्रिक संस्करण लॉन्च होने की उम्मीद है।

घर में ऐसे इंस्टॉल कर सकते हैं इलेक्ट्रिक कार का चार्जर, यहां जानिए स्टेप-बाय-स्टेप प्रोसेस

घर पर EV Charger इंस्टॉल करने से पहले आपको बिजली बोर्ड से परमीशन लेनी होगी। मुख्य रूप से ईवी चार्जर दो तरह के होते हैं। इसमें लेवल 1 और लेवल 2 चार्जर शामिल हैं। लेवल 2 चार्जर 240-वोल्ट आउटलेट का उपयोग करते हैं और लेवल 1 चार्जर की तुलना में बहुत फास्ट होते हैं। आइए स्टेप-बाय-स्टेप प्रोसेस जान लेते हैं।

नई दिल्ली। देश में लगातार इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या बढ़ रही है और इसके साथ चार्जिंग इंफ्रा दुरुस्त होना भी बहुत जरूरी है। अगर आप EV के मालिक हैं और अपने घर में ईवी चार्जर इंस्टॉल करना चाहते हैं, तो हम आपके लिए इसकी स्टेप-बाय-स्टेप प्रोसेस लेकर आए हैं।

एलिजिबिलिटी चेक करें

घर पर EV Charger इंस्टॉल करने से पहले आपको बिजली बोर्ड से परमीशन लेनी होगी। अगर बोर्ड आपको अनुमति देता है, तभी आप घर पर चार्जर लगा सकेंगे। इसके लिए आपको स्थानीय अधिकारियों से मिलना होगा। साथ ही आपको अपना बिजली कनेक्शन भी चेक करना होगा।

सही चार्जर और जगह चुनें

मुख्य रूप से ईवी चार्जर दो तरह के होते हैं। इसमें लेवल 1 और लेवल 2 चार्जर शामिल हैं। लेवल 2 चार्जर 240-वोल्ट आउटलेट का उपयोग करते हैं और लेवल 1 चार्जर की तुलना में बहुत फास्ट होते हैं। आपको अपनी जरूरतों के लिए सही चार्जर चुनना होगा। सुनिश्चित करें कि चार्जर पानी और अन्य खतरों से दूर सुरक्षित स्थान पर लगाया गया है।

चार्जर इंस्टॉल करें

अगर आपको खुद से चार्जर इंस्टॉल करने में दिक्कत हो रही है, तो इस काम के लिए इलेक्ट्रीशियन भी हायर कर सकते हैं। इसके अलावा आप 240 वोल्ट का आउटलेट और चार्जर खुद से भी इंस्टॉल कर सकते हैं।

चार्जर टेस्ट करें

एक बार चार्जर इंस्टॉल हो जाने के बाद आपको यह सुनिश्चित करने के लिए इसका टेस्ट करना होगा कि यह ठीक से काम कर रहा है या नहीं? आप इसे अपने इलेक्ट्रिक वाहन में प्लग इन करके चेक कर सकते हैं। अगर कार ढंग से चार्ज हो रही है, तो समझ लीजिए अपने इंस्टॉलेशन का काम पूरा कर लिया है।

किआ इंडिया घरेलू बाजार में पेश करेगी 3 नई इलेक्ट्रिक कार, लिस्ट में एक फैमिली कार भी शामिल

Kia EV9 को पिछले साल वैश्विक बाजारों के लिए पेश किया गया था। भारत में इसकी लॉन्चिंग 2024 के अंत या 2025 की शुरुआत में होने की उम्मीद है। Kia Clavis को आईसी-इंजन के साथ विदेशों और भारत सहित विभिन्न स्थानों पर परीक्षण के दौरान देखा गया है। 2025 की शुरुआत में दक्षिण कोरियाई ऑटो निर्माता कैरेंस पर आधारित एक इलेक्ट्रिक एमपीवी लाने की योजना बना रहा है।

नई दिल्ली। लगातार बढ़ रही इलेक्ट्रिक कारों की मांग के बीच Kia India भी घरेलू मार्केट में 3 नई EVs पेश करने का प्लान बना रही है। कंपनी की ओर से 2025 के लिए दो स्थानीय रूप से निर्मित इलेक्ट्रिक कारों को डेवलप किया जा रहा है, जबकि फ्लैगशिप EV9 इलेक्ट्रिक 7-सीटर एसयूवी को इस कैलेंडर वर्ष के अंत से पहले या 2025 की शुरुआत में पेश किया जा सकता है। आइए, इनके बारे में जान लेते हैं।

Kia EV9

Kia EV9 को पिछले साल वैश्विक बाजारों के लिए पेश किया गया था। भारत में इसकी लॉन्चिंग 2024 के अंत या 2025 की शुरुआत में होने की उम्मीद है। इंडियन मार्केट में ये पूरी तरह से इम्पोर्ट की जाएगी। EV9 WLTP साइकिल में 541 किमी की ड्राइविंग रेंज प्रदान करती है और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सिंगल और डुअल-मोटर कॉन्फिगरेशन में उपलब्ध है।

Kia Clavis EV

किआ क्लैविस को आईसी-इंजन के साथ विदेशों और भारत सहित विभिन्न स्थानों पर परीक्षण के दौरान देखा गया है। इस साल के अंत तक इसका वर्ल्ड प्रीमियर होने की उम्मीद है, जिसे 2025 की शुरुआत में भारत सहित कई बाजारों में लॉन्च करने की योजना है।

क्लैविस के एक इलेक्ट्रिक संस्करण को भी परीक्षण के दौर से गुजरते हुए देखा गया है और टाटा पंच ईवी को टक्कर देने के लिए 400 किमी से अधिक की रेंज के साथ अगले साल भारतीय बाजार में आने की उम्मीद है।

Kia Carens EV

2025 की शुरुआत में दक्षिण कोरियाई ऑटो निर्माता कैरेंस पर आधारित एक इलेक्ट्रिक एमपीवी लाने की योजना बना रहा है। इस आगामी ई-एमपीवी में क्लैविस के इलेक्ट्रिक संस्करण के साथ कई कंपोनेंट और एलीमेंट शेयर करने की संभावना है। भारतीय बैटरी निर्माता एक्साइड के साथ उनकी साझेदारी, इस फैमिली-ओरिएंटेड एमपीवी को डेवलप करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

होंडा 2 व्हीलर्स ने अप्रैल 2024 में की रिकॉर्ड सेल, एक्सपोर्ट में भी हुई बढ़ोतरी

अप्रैल 2024 के लिए HMSI की बिक्री के आंकड़े भारतीय बाजार में इसके बढ़ती पहुंच का प्रमाण हैं। देश भर में 541946 दोपहिया वाहनों की बिक्री के साथ कंपनी ने पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में बिक्री में 45 प्रतिशत की जबरदस्त बढ़ोतरी की है। Honda 2-Wheelers ने पूर्वी भारत में 80 लाख से अधिक यूनिट बेचीं जिसमें बिहार झारखंड पश्चिम बंगाल ओडिशा और उत्तर-पूर्व भारत शामिल है।

नई दिल्ली। देश की दूसरी सबसे बड़ी दोपहिया वाहन निर्माता कंपनी होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने अप्रैल 2024 में बेहतरीन सेल की है। अपनी विश्वसनीय और स्टाइलिश टू-व्हीलर्स की दम पर HMSI ने इंडस्ट्री में नया मुकाम हासिल किया है।

Honda 2-Wheelers की सेल्स रिपोर्ट

अप्रैल 2024 के लिए HMSI की बिक्री के आंकड़े भारतीय बाजार में इसके बढ़ती पहुंच का प्रमाण हैं। देश भर में 5,41,946 दोपहिया वाहनों की बिक्री के साथ, कंपनी ने पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में बिक्री में 45 प्रतिशत की जबरदस्त बढ़ोतरी की है।

इसमें 4,81,046 यूनिट की घरेलू बिक्री और 60,900 यूनिट का एक्सपोर्ट शामिल है। महीने के लिए घरेलू बिक्री में साल-दर-साल 42% की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई, जबकि निर्यात में पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 67% की भारी बढ़ोतरी हुई।

इन राज्यों में सबसे ज्यादा मांग

Honda 2-Wheelers ने पूर्वी भारत में 80 लाख से अधिक यूनिट बेची हैं, जिसमें बिहार झारखंड पश्चिम बंगाल ओडिशा और उत्तर-पूर्व भारत शामिल है। कंपनी का कहना है कि ये उपलब्धि पूर्वी क्षेत्र में ग्राहकों को हाई-क्वालिटी इनोवेशन और विश्वसनीय दोपहिया वाहन प्रदान कराने के बदौलत हासिल हुई है। कंपनी का कहना है कि 1100 से अधिक टचप्वाइंट के व्यापक नेटवर्क के साथ एचएमएसआई की भारत के पूर्वी राज्यों में मजबूत उपस्थिति है।

बिगविंग और रेड विंग डीलरशिप की हो रही बढ़ोतरी

बाजार में अपनी उपस्थिति को और मजबूत करते हुए, एचएमएसआई ने भारत के विभिन्न शहरों में नई बिगविंग और रेड विंग डीलरशिप खोलकर अपने डीलरशिप नेटवर्क का विस्तार जारी रखा है। इन डीलरशिप को होंडा के प्रीमियम और कम्यूटर सेगमेंट की मोटरसाइकिलों और स्कूटरों तक ग्राहक अनुभव और पहुंच बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है।

अभिनेत्री मोना सिंह ने खरीदी 1 करोड़ रुपये की ये लग्जरी कार, जानिए कितनी है खास

पारिवहन विशेष न्यूज

पॉपुलर बॉलीवुड स्टार Mona Singh ने हाल ही में Mercedes-Benz GLE खरीदी है। मर्सिडीज-बेंज की नवीनतम पेशकश GLE को ग्राहक पेट्रोल और डीजल इंजन विकल्पों में खरीद सकते हैं। मर्सिडीज-बेंज जीएलई फेसलिफ्ट ने पिछले साल भारत में अपनी शुरुआत की थी। इसमें एक अपडेटड ग्रिल बम्पर और एलईडी डीआरएल साथ ही नए हेडलैम्प और टेललाइट्स शामिल हैं। आइएइसके बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। जस्सी जैसी कोई नहीं, लाल सिंह चड्ढा और 3 इडियट्स फिल्मों में काम करने वाली पॉपुलर बॉलीवुड स्टार Mona Singh ने हाल ही में Mercedes-Benz GLE खरीदी है। इस लग्जरी एसयूवी की एक्स शोरूम कीमत 97 लाख रुपये से लेकर 1.15 करोड़ रुपये के बीच है।

Mercedes-Benz GLE का इंजन और परफॉरमेंस

मर्सिडीज-बेंज की नवीनतम पेशकश GLE को ग्राहक पेट्रोल और डीजल इंजन विकल्पों में खरीद सकते हैं। जीएलई 450 पेट्रोल वेरिएंट में एक शक्तिशाली 3.0-लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन है, जो प्रभावशाली 375 बीएचपी और 500 एनएम का पीक टॉर्क देता है।

दूसरी ओर, GLE 300d में 2.0-लीटर टर्बो डीजल इंजन है, जो 265 bhp और 550 Nm का टॉर्क पैदा करता है। और भी अधिक शक्ति चाहने वालों के लिए, टॉप-स्पेक GLE 450d है, जिसमें 3.0-लीटर डीजल इंजन है, जो 362 bhp और 750 Nm का टॉर्क उत्पन्न करता है।

Mercedes-Benz GLE का डिजाइन

मर्सिडीज-बेंज जीएलई फेसलिफ्ट ने पिछले साल भारत में अपनी शुरुआत की थी। इसमें एक अपडेटड ग्रिल, बम्पर और एलईडी डीआरएल, साथ ही नए हेडलैम्प और टेललाइट्स शामिल हैं।

Mercedes-Benz GLE के फीचर्स और इंटीरियर

केबिन के अंदर इसे कैपेसिटिव टच कंट्रोल पैनल से लैस एक नया मल्टी-फंक्शन स्टीयरिंग व्हील, नवीनतम एमबीयूएक्स सिस्टम वाली एक एडवांस इंफोटेनमेंट स्क्रीन और स्लाइडिंग फंक्शन के साथ रिक्लाइनिंग सीट्स शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त, जीएलई अब इलेक्ट्रिक रूप से संचालित सन ब्लाइंड्स, फास्ट-चार्जिंग यूएसबी-सी पोर्ट, फोर-जोन क्लाइमेट कंट्रोल और 9 एयरबैग के साथ आती है।

हुंडई ग्रेंड 10 एनआईओएस का नया कॉर्पोरेट वैरियंट लॉन्च, जानें खूबियां और कीमत....

परिवहन विशेष न्यूज

साउथ कोरियाई कार निर्माता Hyundai Motors की ओर से भारतीय बाजार में कई बेहतरीन Cars And SUVs को ऑफर किया जाता है। Hyundai Motor India की ओर से हाल में ही हैचबैक कार के तौर पर ऑफर की जाने वाली Grand i10 Nios का नया Corporate Variant लॉन्च किया गया है। इसे किस कीमत पर और किन खूबियों के साथ लाया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई बेहतरीन कारों और एसयूवी की बिक्री करने वाली साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Hyundai Motors ने हैचबैक कार Grand i10 Nios का नया Corporate Variant लॉन्च कर दिया है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि इस नए वेरिएंट में कंपनी की ओर से क्या खूबियां दी गई हैं। साथ ही इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है।

Hyundai Grand i10 Nios का Corporate Variant लॉन्च

हुंडई मोटर इंडिया की ओर से भारतीय बाजार में ऑफर की जाने वाली हैचबैक कार आई-10 का नया कॉर्पोरेट वेरिएंट लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इसमें कई बेहतरीन खूबियों को भी दिया गया है। इस वेरिएंट के जरिए कंपनी युवाओं को लुभाने की तैयारी कर रही है।

कैसे हैं फीचर्स

हुंडई ने ग्रैंड आई-10 नियोस के कॉर्पोरेट वेरिएंट में 17.14 सेमी टचस्क्रीन दिया है। इसके साथ गाड़ी में ड्यूल टोन स्टाइल के 15 इंच व्हील्स, छह एयरबैग, 30 से ज्यादा सेफ्टी फीचर, ड्यूल टोन ग्रे इंटीरियर, ड्राइवर सीट हाइट एडजस्टमेंट, फुटवेल लाइट, फ्रंट रूम लैंप, स्टेयरिंग व्हील माउंटिड कंट्रोल, रियर एसी वेंट, पैसेंजर वेनिटी मिरर, टीपीएमएस, एबीएस, ईबीडी, एलईडी डीआरएल, टेलगेट पर कॉर्पोरेट बैजिंग को दिया गया है।

भाषाओं को बचाने की भारतीय पहल

प्रमोद भार्गव

भाषाओं को बचाने के लिए समय की मांग है कि क्षेत्र विशेष में स्थानीय भाषा के जानकारों को ही निगमों, निकायों, पंचायतों, बैंकों और अन्य सरकारी दफ्तरों में रोजगार दिए जाएं। इससे अंग्रेजी के फैलते वर्चस्व को चुनौती मिलेगी और ये लोग अपनी भाषाओं व बोलियों का संरक्षण तो करेंगे ही, उन्हें रोजगार का आधार बनाकर गरिमा भी प्रदान करेंगे।

प्रतिस्पर्धा के दौर में मातृभाषा को लेकर युवाओं में हीनभावना भी पनप रही है। भाषाओं को बचाने के लिए समय की मांग है कि क्षेत्र विशेष में स्थानीय भाषा के जानकारों को ही निगमों, निकायों, पंचायतों, बैंकों और अन्य सरकारी दफ्तरों में रोजगार दिए जाएं। इससे अंग्रेजी के फैलते वर्चस्व को चुनौती मिलेगी और ये लोग अपनी भाषाओं व बोलियों का संरक्षण तो करेंगे ही, उन्हें रोजगार का आधार बनाकर गरिमा भी प्रदान करेंगे। ऐसी सकारात्मक नीतियों से ही युवा पीढ़ी मातृभाषा के प्रति अनायास पनपने वाली हीनभावना से भी मुक्त होगी। इस नजरिए से 52 क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई एक अनूठी और आवश्यक पहल है

कोई भी भाषा जब मातृभाषा नहीं रह जाती तो उसके प्रयोग की अनिवार्यता में कमी और उससे मिलने वाले रोजगार मूलक कार्यों में भी कमी आने लगती है। पिछले 75 सालों में हमारी भाषाओं और बोलियों के साथ यही होता रहा है, परंतु अब नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (एनईपी) को लागू करने की दिशा में उल्लेखनीय पहल करते हुए केंद्र सरकार नए सत्र से पांच नए उपाय करने जा रही है। इनमें बच्चों को मातृ, घरेलू और क्षेत्रीय भाषा में पाठ्य पुस्तकें पढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। इस लक्ष्यपूर्ति के लिए 52 प्रवेशिकाएं अर्थात पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गई हैं। इनसे छात्र-छात्राओं से लेकर वयस्क तक वर्णमाला और दो अंकों तक गणित सीख सकेंगे। पहले चरण में 17 राज्यों की राजभाषा व स्थानीय भाषा में 52 पुस्तकें मैसूर के भारतीय भाषा संस्थान और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने तैयार की हैं। देश में ऐसी 121 भाषाएं हैं जिन्हें क्षेत्रीय लोग स्थानीय स्तर पर लिखने व बोलने में प्रयोग करते हैं। जल्दी ही देश के बाकी राज्यों की आंचलिक भाषाओं में प्रवेशिका उपलब्ध करा दी जाएंगी। इन पाठ्य पुस्तकों का उपलब्ध होना न केवल विद्यार्थियों के लिए, बल्कि विलोपित हो रही मातृभाषाओं का अस्तित्व बचाए रखने की परिवर्तनकारी पहल है। यह पहल निर्बाध और भविष्यवादी शिक्षण परिदृश्य तैयार कर भारतीय भाषाओं में सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देगी। इससे नई शिक्षा नीति का दृष्टिकोण साकार होगा और शालेय शिक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव आएंगे। सरकार ने राष्ट्रीय विद्या समीक्षा केंद्र का राज्य इकाइयों व 200 डीटीएच चैनलों के साथ एकीकरण का निर्णय भी लिया है। इस हेतु सरकार ने 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए 22 क्षेत्रीय व प्रादेशिक भाषाओं में चैनल तैयार कर लिए हैं।

ये बिना इंटरनेट चलेंगे। भविष्य में ये चैनल ओटीटी और यू-ट्यूब पर भी उपलब्ध होंगे। भारत में ऐसे हालात सामने भी आने लगे हैं कि किसी एक इनसान की मौत के साथ उसकी भाषा का भी अंतिम संस्कार हो जाए। 26 जनवरी 2010 को अंडमान द्वीप समूह की 85 वर्षीय बोआ के निधन के साथ ग्रेट-अंडमानी भाषा 'बो' भी हमेशा के लिए विलुप्त हो गई। इस भाषा को जानने, बोलने और लिखने वाली वे अंतिम इनसान थीं। इसके पूर्व नवंबर 2009 में एक और महिला बोरो की मौत के साथ खोरा भाषा का अस्तित्व समाप्त हो गया था। नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी एंड लिविंग टंग्स इंस्टीट्यूट फॉर एंडेंजर्ड लैंग्वेजेज के अनुसार हरेक पखवाड़े एक भाषा की मौत हो रही है। सन-2100 तक भूमण्डल में बोली जाने वाली सात हजार से भी अधिक भाषाओं का लोप हो सकता है। इस दायरे में आने वाली खासतौर से आदिवासी व जनजातीय भाषाएं हैं जो लगातार उपेक्षा का शिकार होने के कारण विलुप्त हो रही हैं। ये भाषाएं बहुत उन्नत हैं और पारंपरिक ज्ञान का भंडार हैं। भारत सरकार ने उन भाषाओं के आंकड़ों का संग्रह किया है जिन्हें 10 हजार से अधिक लोग बोलते हैं। 2001 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार ऐसी 121 भाषाएं और 234 मातृभाषाएं हैं। भाषा-गणना की ऐसी बाध्यकारी शर्त के चलते जिन भाषा व बोलियों को बोलने वाले लोगों की संख्या 10 हजार से कम है, उन्हें गिनती में शामिल ही नहीं किया गया। पूरी दुनिया में सात्ताईस सौ भाषाएं संकटग्रस्त हैं। इन भाषाओं में असम की 17 भाषाएं शामिल हैं। यूनेस्को द्वारा जारी एक जानकारी के मुताबिक असम की देवरी, मिसिंग, कछारी, बेइटे, तिवा और कोच राजवंशी सबसे संकटग्रस्त भाषाएं हैं। इन भाषा-बोलियों का प्रचलन लगातार कम हो रहा है। नई पीढ़ी के सरोकार असमिया, हिन्दी और अंग्रेजी तक सिमट गए हैं। इसके बावजूद 28 हजार लोग देवरीभाषी, मिसिंगभाषी साढ़े पांच लाख और बेइटेभाषी करीब 19 हजार लोग अभी बाकी हैं। इनके अलावा असम की बोडो, कार्बो, डिमासा, विष्णुप्रिया, मणिपुरी और काकबरक भाषाओं के जानकार भी लगातार सिमटते जा रहे हैं। वे ही भाषाएं बोलियों और लिपियों के रूप में जीवित रह सकती हैं जो उपयोग में बनी रहें। पूरी दुनिया में 15 हजार से अधिक भाषाएं दर्ज हैं, लेकिन आज उनमें से आधी से ज्यादा मर गई हैं। इसका कारण इन्हें उपयोग से वंचित कर देना है। कई लोग भाषाओं की विलुप्ति का कारण आक्रांताओं के हमलों को मानते हैं।

भारत में भी इस स्थिति को भाषाओं की विलुप्ति का कारण माना गया, लेकिन यह तथ्य थोथा है। फ्रांस में भी यह भ्रम फैला हुआ है। फ्रेंच भाषियों को यह आशंका सता रही है कि वहां कीयुवा पीढ़ी अंग्रेजी के प्रति आकर्षित है, इसलिए वहां अंग्रेजी से मुक्ति के उपाय सुझाए जा रहे हैं। नाइजीरिया और केमरून की बिक्या भाषाएं प्रयोग में नहीं रहने के कारण लुप्त हुईं। इस भाषा को प्रचलन में बनाए रखने वाले एक-एक कर जब मरते चले गए तो उनके साथ भाषा भी काल में समाती चली गई। वर्तमान में विश्व की 90 प्रतिशत भाषाओं और बोलियों पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। वैसे भाषाओं का मरना हर युग और हर देश में एक सिलसिला बना रहा है। भारत की सबसे प्राचीन ब्राह्मी लिपि को आज बांचने वाला कोई नहीं है। विकास के साथ जो भाषा जुड़ी होती है, उसकी जीवंतता बनी रहती है। आज अंग्रेजी जहां भाषाओं की विलुप्तता की दृष्टि से खलनायिका साबित हो रही है, वहीं इसके महत्व को एकाएक इसलिए नजरअंदाज नहीं किया जा सकता क्योंकि यह आधुनिक तकनीक के व्यावहारिक और व्यावसायिक उपयोग का विश्वव्यापी आधार बन गई है।

दुनिया की युवा पीढ़ी विश्व समाज से जुड़ने के लिए अंग्रेजी की ओर आकर्षित है, लेकिन यदि अंग्रेजी इसी तरह पैर पसारती रही तो दुनिया में भाषाई एकरूपता छा जाएगी, जिसकी वटवृक्षी छाया में अनेक भाषाएं मर जाएंगी। भारत की तमाम स्थानीय भाषाएं व बोलियां अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के कारण संकटग्रस्त हैं। व्यावसायिक, प्रशासनिक, चिकित्सा, अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी की आधिकारिक भाषा बन जाने के कारण अंग्रेजी रोजगारमूलक शिक्षा का प्रमुख आधार बना दी गई है। इन कारणों से उत्तरोत्तर नई पीढ़ी मातृभाषा के मोह से मुक्त होकर अंग्रेजी अपनाने को विवश है। प्रतिस्पर्धा के दौर में मातृभाषा को लेकर युवाओं में हीनभावना भी पनप रही है। भाषाओं को बचाने के लिए समय की मांग है कि क्षेत्र विशेष में स्थानीय भाषा के जानकारों को ही निगमों, निकायों, पंचायतों, बैंकों और अन्य सरकारी दफ्तरों में रोजगार दिए जाएं। इससे अंग्रेजी के फैलते वर्चस्व को चुनौती मिलेगी और ये लोग अपनी भाषाओं व बोलियों का संरक्षण तो करेंगे ही, उन्हें रोजगार का आधार बनाकर गरिमा भी प्रदान करेंगे। ऐसी सकारात्मक नीतियों से ही युवा पीढ़ी मातृभाषा के प्रति अनायास पनपने वाली हीनभावना से भी मुक्त होगी। इस नजरिए से 52 क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई एक अनूठी और आवश्यक पहल है। भाषा संबंधी नीतियों में ऐसे ही बदलावों से लुप्त हो रही भाषाओं को बचाया जाना संभव होगा।

संपादक की कलम से

होटल इकाइयों के किरदार बदलो

हिमाचल में पर्यटन का ताज ओढ़े एचपीटीडीसी तथा एचआरटीसी के घाटों को समझें, तो यह राज्य किस क्षेत्र में आत्मनिर्भर होगा। आश्चर्य यह कि 55 होटलों का संचालन कर रहा हिमाचल पर्यटन निगम 31 इकाइयों की वित्तीय लाज नहीं बचा पा रहा। ताज्जुब यह कि चिंतपूर्णी, ज्वालाजी, चंबा, बिलासपुर, कुल्लू-मनाली, शिमला, धर्मशाला-मकलोडगंज व औद्योगिक क्षेत्र परवाणू तक के होटल घाटा पैदा कर रहे हैं। बावजूद इसके हमारे पास एशियन विकास बैंक से इतना ऋण तो मिल ही जाएगा कि आने वाले वर्षों में कुछ और राजनीतिक इकाइयां खोल लेंगे। इससे क्या फर्क पड़ता कि हिमाचल में करीब पौने दो करोड़ सैलानी आ रहे हैं या आगामी लक्ष्य पांच करोड़ का है। आश्चर्य यह कि बढ़ते सैलानी निजी वोल्वो बसों में बैठकर प्राइवेट होटलों को अधिमान दे रहे हैं, जबकि एचपीटीडीसी व एचआरटीसी के पास बेहतरीन स्टाफ तथा उच्च काबिलीयत के अधिकारियों के अलावा बेहतरीन साइट्स व संपत्तियां हैं।

मुख्य तौर पर न योजनाओं में व्यावसायिक दृष्टि है और न ही प्रबंधन में इस तरह के सरोकार हैं, जो पल-पल बदलते उद्योग की जरूरतें समझ सकें। उदाहरण के लिए धर्मशाला की पांच इकाइयों में से तीन घाटे पर हैं, तो यह करामात निठल्लेपन और उबाऊ ठहराव की है। महामहिम दलाईलामा के प्रवास, प्रवासी तिब्बती सरकार के मुख्यालय के अलावा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम ने धर्मशाला में हर बड़ी होटल श्रृंखला को अपनी इकाई चलाने का मौका दिया, लेकिन हिमाचल पर्यटन निगम अपनी बूढ़ी लीलन, क्रॉकरी और थकी हुई अधोसंरचना से निजात नहीं पाना चाहता, नतीजतन जब सारे निजी होटल बुक हो जाएं तो सरकारी इकाइयों में स्थान ढूंढा जा सकता है। कब तक सरकारी होटलों को कुल्लू-मनाली, शिमला या मकलोडगंज में भी घाटे की माला पहननी पड़ेगी। घाटे के होटलों की श्रृंखला बनाने के बजाय इनकी उपयोगिता बढ़ाने का सोचना होगा। मसलन परवाणू या बीबीएन में पर्यटन निगम की इकाइयां वो कमाल कर सकती हैं, जिसके लिए ये औद्योगिक शहर चंडीगढ़ या पंचकूला का रुख करते हैं। प्रदेश के हर शहर और कस्बे में पर्यटन निगम वेडिंग जोन, कान्फ्रेंस एरिया, शॉपिंग परिसर तथा वे साइड फूड मार्ट स्थापित करे, तो हंगामा हो सकता है। पर्यटन निगम को हाईवे पर्यटन की अधोसंरचना स्थापित करके प्रदेश के एचपीएमसी, मिल्क फेडरेशन व हथकरघा निगम के साथ उपहार तथा खानपान के केंद्रों की लाभकारी उपस्थिति दर्ज कर सकता है। हैरानी यह कि धार्मिक स्थलों की इकाइयां या यात्री निवास जैसे बजट होटल भी घाटे में हैं। कारण यही कि इन परिसरों को कमजोर प्रदर्शन के लिए छोड़ दिया गया है। हिमाचल प्रदेश परिवहन निगम की अंतरराज्यीय बसों की बुकिंग के साथ एचपीटीडीसी के होटलों की बुकिंग जोड़ दी जाए, तो नित नए रूट शुरू करने के साथ सरकारी होटलों की आक्यूपेंसी भी बढ़ सकती है। जिस दिन एचआरटीसी व पर्यटन निगम का एमडी एक ही अधिकारी होगा, हिमाचल आने वाले यात्री पर्यटक बन जाएंगे।

कायदे से हिमाचल को अपने दर्जनों बस अड्डों को पर्यटक, मनोरंजन एवं सिटी सेंटर तथा महापार्किंग स्थलों के रूप में विकसित करना होगा ताकि हर पर्यटक वहां पहुंचकर सर्वप्रथम सरकारी होटल इकाइयों का किरदार बने। इसमें दो राय नहीं कि हिमाचल पर्यटन निगम के होटलों का खाना सबसे बेहतरीन व प्रदेश की ब्रांडिंग कर रहा है, लेकिन चाहकर भी पर्यटक को हम यह संदेश नहीं दे पा रहे कि हिमाचली थाली के मायने क्या हैं। एचपीटीडीसी अगर शिद्दत से हिमाचली थाली, सिड्डू, कचौरी व क्षेत्रीय खाद्य व्यंजनों की महफिल सजा दे, तो सारे घाटे सैलानी का पेट निगल लेगा। इसके लिए व्यासायिक नजरिए की जरूरत ही नहीं जबरदस्त प्लानिंग की जरूरत है और यह तब होगा जब एडीबी फंडिड परियोजनाओं में राजनीतिक दुरुपयोग नहीं होगा।

चर्चा

'वोट जेहाद' के मायने

दुनिया के सबसे प्राचीन लोकतंत्र अमरीका और सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में आजकल जेहाद की गूंज है। संदर्भ और कारण अलग-अलग हैं। अमरीका के संदर्भ में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंरप का कहना है कि अमरीका में जेहाद नहीं चाहिए। अमरीका में यूनिवर्सिटीज का इस्लामीकरण नहीं होना चाहिए। कुछ यूनिवर्सिटी ऐसी हैं, जिनके परिसरों में युवा शक्ति गाजा के फलस्तीनियों के पक्ष में आंदोलित हैं। वे हमास जैसे आतंकी संगठन के समर्थक या प्रतिनिधि हो सकते हैं। आश्चर्य है कि गाजा के मुसलमानों के हालात और इजरायल के हमलों पर अधिकतर इस्लामी देश अब खामोश हैं, लेकिन अमरीका की यूनिवर्सिटीज में आंदोलन जारी हैं। माइक पर नमाज पढ़ी जा रही है। परिसरों में नौजवानों ने तंबू तक गाड़ कर अवरोधक खड़े कर लिए हैं। यह अमरीका के लोकतंत्र की संस्कृति नहीं है। इन आंदोलनों को खत्म किया जाना चाहिए। हमने देखा है कि जब यूरोप ने जेहाद के लिए अपने दरवाजे खोले, तो क्या हुआ? पेरिस को देख लो। लंदन में देख लो। वे अब पहचानने लायक नहीं हैं। हम अमरीका के साथ ऐसा नहीं होने देंगे। हमारे पास अविश्वसनीय संस्कृति और परंपरा है। बहरहाल भारत में आम चुनाव का मौसम है। लोकसभा के लिए मतदान के चरण जारी हैं, लेकिन मारिया आलम खां ने 'वोट जेहाद' के जरिए मुसलमानों का आह्वान किया है। वह पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद की भतीजी हैं। सम्पन्न और शिक्षित परिवार से हैं। फिर भी इतनी सांप्रदायिक और देश-विरोधी सोच की हैं, उनका आह्वान सुनकर हैरानी हुई।

जेहाद सिर्फ नारेबाजी तक सीमित नहीं था, बल्कि मारिया ने मौजूदा सत्ता के प्रति जिन शब्दों का इस्तेमाल किया है, वे बेहद नफरती और आपत्तिजनक भी हैं। सवाल है कि क्या भारत में हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि के अलगाववादी आह्वानों पर ही चुनाव कराए जा सकते हैं? चुनाव आपसी समभाव, सौहार्द और भाईचारे के भाव के साथ नहीं हो सकते? भारत तो संवैधानिक तौर पर 'पंथनिरपेक्ष' देश है। दरअसल इस तरह जेहाद की बात करना आपराधिक मानसिकता है। मारिया जैसे लोग चाहते हैं कि एक-एक मुसलमान घर से निकले और अपने तय मुस्लिम उम्मीदवार के पक्ष में ही वोट सुनिश्चित करे। मुसलमानों को देश के संसाधनों पर भी पहला हक चाहिए। सरकारी नौकरियों, शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी ठेकों, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी आरक्षण चाहिए। कांग्रेस 2009 से अपने चुनाव घोषणा पत्रों में ऐसे आरक्षण या समान अवसर मुहैया कराने का आश्वासन देती आ रही है। उससे पहले भी ऐसी ही सोच रही होगी, लेकिन हमने खंगाल कर नहीं देखा। यह दीगर है कि मई, 2014 से कांग्रेस केंद्रीय सत्ता के बाहर है, लेकिन वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के पर्सनल लॉ, पोशाक, खान-पान और वक्फ के वर्चस्व को भी पूरी स्वतंत्रता दिए जाने की सुनिश्चित घोषणा कर चुकी है। क्या अब देश में 'शरिया कानून' भी लागू रहेगा? वोट के नाम पर जेहाद किस तरह होगा, किसी ने भी स्पष्ट नहीं किया।

न सलमान खुर्शीद ने और न ही कांग्रेस ने 'वोट जेहाद' का खंडन किया है। जेहाद किस लोकतंत्र का हिस्सा या पर्याय है? हमने तो भारत में आतंकवाद के नाम पर भी जेहाद सुना है। देश के विभिन्न हिस्सों में जो आतंकी हमले किए गए हैं या जेहाद के नाम पर जो कत्लेआम, लहूलुहान जारी है, वह 'धर्मयुद्ध' किस तरह कहा या माना जा सकता है? मारिया के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करना ही पर्याप्त नहीं है। उनके खिलाफ देश-विरोधी गतिविधियों वाले कानून में मुकदमा चलाया जाना चाहिए।

डा. निधि शर्मा, स्वतंत्र लेखिका

चुनावी समय में सोशल मीडिया बना चाणक्य

इसका ताजा उदाहरण रणवीर सिंह एवं आमिर खान के साथ हुई घटना से पता लगता है। इन दुविधाओं का समाधान जनता की तार्किक सावधानी ही है, क्योंकि कोई सूचना जब अत्यधिक वेग, हिंसा व उत्तेजना पैदा करे तो शंकित होना लाजिमी है। कुछ देर ठहरिए और मन को शांत कर सोचिए। क्योंकि जनता के जुड़ाव के लिए असंख्य सूचना का ऐसा समुद्र खड़ा कर दिया गया है जिसमें तैरना स्वयं सीखना पड़ेगा। क्योंकि जनता इस समय एंग ली द्वारा निर्देशित फिल्म लाइफ ऑफ पाई के मुख्य किरदार पाई की भांति खड़ी है जहां उसे सूचना के बवंडर से स्वयं बचना होगा'

आज के समय में वही उम्मीदवार जनता का पसंदीदा बन जाता है जो सोशल मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुंच बनाता है क्योंकि जो दिखाता है वही बिकता है, इसी बाजार की रणनीति को आज सभी राजनीतिक पार्टियां अपना रही हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि विज्ञापन को जांचने व परखने के लिए कई जांच एजेंसियां व प्रतियोगी कंपनियां अन्य कंपनियों के खिलाफ भ्रामकता के आधार पर कोर्ट का दरवाजा खटखटा सकती हैं। इसका हालिया उदाहरण देखने को मिला कि सुप्रीम कोर्ट ने पतंजलि को भ्रामक विज्ञापन देने के लिए फटकार लगाई और इसके साथ-साथ इस कंपनी के खिलाफ याचिकाकर्ता इंडियन मेडिकल एसोसिएशन को भी आड़े हाथों लिया। कोर्ट ने एलोपैथी डॉक्टरों द्वारा मरीजों को कथित तौर पर महंगी और गैर जरूरी दवाएं लिखने पर नाराजगी जताई है। इस मुद्दे से कोर्ट का जनता के शरीर पर पडने वाले नकारात्मक असर का चिंतन तो उजागर होता है, लेकिन हर दिन सोशल मीडिया पर दिखाए जाने वाले कटेंट का लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर पडने वाले नकारात्मक प्रभाव की जिम्मेवारी कौन लेगा? इन दिनों चुनावी समय में तो हर राजनीतिक पार्टी स्वयं भी और इंफलुएंसर के माध्यम से देश के हर तबके तक पहुंचने के लिए प्रभावी सामग्री का प्रयोग अनिवार्य रूप से कर रही है।

यह सामग्री कितनी सही है और कितनी गलत, इसके लिए न तो कोई सरकारी मशीनरी है और न ही कोई एजेंसी। हालांकि चुनाव आयोग सोशल मीडिया के माध्यम से चुनाव प्रसार संबंधित सामग्री को जांचने के लिए हर जिले व राज्य स्तर पर बनाए गए कंट्रोल रूम के माध्यम से मॉनिटरिंग कर रहा है, लेकिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में सामग्री साधारण न होकर अब आर्टिफिशियल इंटेलिजैंस से भी बनाई जा रही है जिससे निपटना बेहद चुनौतीपूर्ण है। इसके अलावा चुनाव आयोग तो आचार संहिता लागू होने के बाद से ही एक्टिव हुआ है, लेकिन राजनीतिक पार्टियां पिछले एक साल से अपने प्रचार-प्रसार में जुट गई हैं। यह बात इससे सिद्ध होती है कि यह वर्ष शुरू होते ही चुनावों को देखते हुए देश की राजनीतिक पार्टियों ने पहले 2 से 3 महीनों में मेटा एवं गूगल विज्ञापन में 102.7 करोड़ खर्च कर दिए। वहीं भाजपा पिछले एक साल से सरल नाम की ऐप के जरिए जनता से संपर्क बनाने में लगी हुई है, जिसे लगभग 2.9 मिलियन लोग गूगल प्ले स्टोर के जरिए डाउनलोड कर चुके हैं। वहीं विपक्षी गठबंधन भी सामाजिक न्याय, किसान, युवा व बेरोजगारी

जैसे मुद्दों को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म से उठाकर बड़ा अभियान चला रहा है। लेकिन फिर सवाल सिर्फ इतना है कि इन पार्टियों द्वारा दी जा रही सूचना कितनी विश्वसनीय है? सोशल मीडिया के प्रति दीवानगी इतनी है कि डिजिटल सलाहकार फर्म केपियोस के मुताबिक दुनिया भर में 520 करोड़ लोग सोशल मीडिया की अलग-अलग साइट्स का प्रयोग करते हैं जिनकी संख्या सालाना 3 से 4 प्रतिशत बढ़ रही है। वहीं हमारे देश में आईआईएस रोहतक के एक अध्ययन के मुताबिक लगभग 62 प्रतिशत युवा जानकारी के लिए सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म उपयोग करते हैं जिनमें से एक पुरुष औसतन स्क्रीन पर 6 घंटे 45 मिनट और महिला 7 घंटे 5 मिनट व्यतीत करती है। यानी कि सोशल मीडिया ही सूचना का मुख्य स्त्रोत बन चुका है।

इस संदर्भ में सूचना का प्रवाह और उसकी संरचना मानवीय व्यवहार पर प्रभाव डाल रही है। चुनावी समय में पार्टियां अन्य समय से दुगनी रफ्तार के साथ अपने ऑनलाइन सामग्री के माध्यम से जनता को जोडने की कोशिश करती हैं। जिस पार्टी की गति जितनी नवनीतम और तेज होती है वो उसी गति से नए वोटर व समर्थन हासिल करने में कामयाब हो जाती है। खास बात यह है कि इन सोशल मीडिया साइट्स के मालिक इस समय में नियंत्रण करने के बजाय मूकदर्शक बन जाते हैं क्योंकि यह समय पैसा बनाने का है। इस बिंदु पर न तो कोई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कानून उन्हें नियंत्रण कर सकने में सक्षम है। इस मौके का फायदा उठाकर पार्टियां अनियंत्रित तरीके से नियोजित वर्ग में किसी भी तरीके से अपनी पहुंच बढ़ाती हैं और उनके आईटी सैल जनता की भावनाओं को अपने पक्ष में करने की पूरी कोशिश करते हैं।

सोशल मीडिया की एल्गोरिदम के कारण आपका हल्का सा भी झुकाव फेक न्यूज के जंजाल में फंसा देता है और जनता इको चैम्बर से बाहर ही नहीं निकल पाती। वो अभेद्य चक्रव्यूह बन जाता है जिसमें जनता बिना कुछ सोचे-समझे बस फंसती ही चली जाती है और रही-सही कसर डीपफेक वीडियो ने पूरी कर दी है जहां प्रसिद्ध व्यक्तियों को ढाल बनाकर कुछ गलत तत्व अपने उद्देश्यों को पूरा करने में लगे हुए हैं। इसका ताजा उदाहरण रणवीर सिंह एवं आमिर खान के साथ हुई घटना से पता लगता है। इन दुविधाओं का समाधान जनता की तार्किक सावधानी ही है, क्योंकि कोई सूचना जब अत्यधिक वेग, हिंसा व उत्तेजना पैदा करे तो शंकित होना लाजिमी है। कुछ देर ठहरिए और मन को शांत कर सोचिए। क्योंकि जनता के जुड़ाव के लिए असंख्य सूचना का ऐसा समुद्र खड़ा कर दिया गया है जिसमें तैरना स्वयं सीखना पड़ेगा। क्योंकि जनता इस समय एंग ली द्वारा निर्देशित फिल्म लाइफ ऑफ पाई के मुख्य किरदार पाई की भांति खड़ी है जहां उसे सूचना के बवंडर से स्वयं बचना होगा और अपने मानसिक विकास व उत्तरजीविता के लिए स्वयं सोचना होगा।

चलो नई गारंटी दी जाए

बाजारवाद का दौर है। पब्लिक एकदम नई चीज पसंद करती है। चाहे राजनीति हो, चाहे चाय पकौड़े की दुकान। राजनीति में कुछ नया दिखता है तो पब्लिक एकदम से दीवानी हो जाती है। पकौड़े की दुकान में कोई नई आइटम आ जाती है तो ग्राहक खिंचे चले आते हैं। अब चुनावों का मौसम है तो नई-नई गारंटियां दी जा रही हैं। पुरानी गारंटियां पब्लिक भूल रही हैं, इसलिए पुरानी गारंटियां कैंसिल हो रही हैं और नई गारंटियां ध्यान आकर्षित कर रही हैं। पब्लिक अब 10 गारंटियां भूल गई है। उसे इतना याद है कि गोबर खरीदने की बात हुई थी और गोबर के ढेर लगे हैं, लेकिन सरकार ने सत्ता में आने के बाद सब कुछ गुड गोबर कर दिया है। क्योंकि पार्टी के ही कुछ विधायक साथ छोड़ कर चले गए हैं और सरकार गुड़ बचाने में लगी है। गोबर की तरफ अभी ध्यान नहीं है। गोबर इक_ा वाले सरकार के खिलाफ कहीं मोर्चा न खोल दे, इसलिए नई गारंटियां चुनावी घोषणा पत्र में परोस दी गई हैं। इसमें रोजगार की बात नहीं है। महंगाई की बात नहीं है। पारदर्शी प्रशासन की बात नहीं है। स्वास्थ्य सुविधाओं की बात नहीं है। कानून व्यवस्था की बात नहीं है। सिर्फ एक ही वादा किया गया है कि जो बिक गए हैं, वह सलाखों के पीछे डाले जाएंगे। बिकने वाले क्यों बिक गए, इस पर घोषणा पत्र खामोश है। कुछ दल धर्म को भी घोषणा पत्र में घसीट कर ले आए हैं, ताकि पब्लिक को लगे कि अगर धर्म खतरे में हुआ तो देश भी खतरे में होगा। सबका अपना अपना एजेंडा है, लेकिन सबका एक ही फंडा है कि कैसे पब्लिक के वोट जुटाए जाएं और फिर कैसे पब्लिक को दरकिनार कर दिया जाए।

क्योंकि पब्लिक बीच में रहेगी तो सरकार को खतरा रहेगा। पब्लिक पूछती रहेगी कि वायदों का क्या हुआ और गारंटियां कहां गई। जो दूरदर्शी राजनीतिक दल होते हैं, वे पब्लिक को फालतू के मसलों में उलझा कर रखते हैं ताकि मतलब के मसले पर जनता का ध्यान न जाए। पब्लिक का ध्यान कहीं और होगा तो सत्तारूढ़ दल अपना ध्यान अपने निशाने पर केंद्रित कर सकेगा। लेकिन पब्लिक का ध्यान भटक गया तो सत्तारूढ़ दल का मिशन भी भटक जाएगा। खैर बात हो रही थी गारंटी की। इसलिए सत्तासीन दल ने डिसाइड किया था कि अब पुरानी गारंटियों से लोगों का ध्यान हटाने के लिए नई गारंटियां दी जाएंगी। इनमें चरणबद्ध ढंग से लोगों को चांद की सैर कराने का वायदा किया जाएगा ताकि चांद पर पहुंच कर लोग जब अपनी धरती को देखेंगे तो उन्हें चांद के विकास और अपनी धरती के डेवलपमेंट कार्यों पर तुलनात्मक अध्ययन करने का मौका मिलेगा। निश्चित रूप से चांद विकास के मामले में पीछे जाएगा। वहां पानी नहीं होगा, बिजली नहीं होगी, सडक़ें नहीं होंगी। इससे सत्तारूढ़ दल के नेताओं को यह प्रचार करने का मौका मिल जाएगा कि हम चांद से भी आगे हैं। कुछ नेता पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान का उदाहरण देकर कह सकेंगे कि हम उनसे आगे हैं।

पब्लिक इन बातों से बहुत खुश होती है। उन्हें लगता है कि चांद भी हमारी धरती के मुकाबले तरक्की में पीछे है और पाकिस्तान की तो लुटिया डूब रही है। इससे पब्लिक को गौरवान्वित होने का मौका मिलता है। पब्लिक गौरवान्वित होती रहे, इससे बढक़र चकाचक गारंटी और क्या हो सकती है। इसलिए यह गारंटी पब्लिक के बीच में आकर्षण का केंद्र बन रही है। चुनाव में कौन कितने में बिका, इस बारे पब्लिक फालतू में सोच कर अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहती। पब्लिक को लगता है कि बाजारवाद का दौर है। इसमें हाईकमान भी खरीदा जा सकता है। हाईकमान का मु_ी में होना किसी भी दल के नेता जी के लिए अपने करियर में आगे बढ़ाने की सबसे बड़ी गारंटी है। यही गारंटी सर्वोपरि है। नेताजी यही गारंटी दे रहे हैं। इसलिए उनका डंका बज रहा है। पब्लिक के बीच में यही मैसेज जा रहा है कि नेताजी की गारंटी पत्थर पर खींची लकीर होती है। नेताजी मानते हैं कि पब्लिक लकीर की फकीर होती है।

गुरमीत बेदी

प्याज निर्यात पर प्रतिबंध हटा; किसानों के लिए फायदे की बात, पर घरेलू बाजार में कीमतों पर क्या होगा असर?

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार ने प्याज के निर्यात पर लगे प्रतिबंध को हटा लिया है। यह फैसला मौजूदा सीजन में प्याज की अच्छी पैदावार की संभावना को देखते हुए किया गया है। इस फैसले से देश में प्याज किसानों की आय में बढ़ोतरी होने की बात कही गई है। आइए जानते हैं कि सरकार ने प्याज के निर्यात का फैसला क्यों किया और इसका घरेलू बाजार पर क्या असर होगा।

नई दिल्ली। सरकार ने प्याज के निर्यात पर लगे प्रतिबंध को 04 मई, 2024 से हटाने का फैसला किया है। यह फैसला देश में प्याज के मौजूदा रबी पैदावार के अच्छे होने और बेहतर मानसून की वजह से खरीफ के दौरान भी बढ़िया पैदावार की संभावना को देखते हुए किया गया है। प्याज निर्यात की न्यूनतम कीमत 550 डॉलर प्रति टन तय की गई है। इस फैसले की वजह से देश में प्याज की पैदावार करने वाले किसानों की आय में बढ़ोतरी होने की बात कही गई है।

विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) के इस फैसले का असर महाराष्ट्र जैसे प्याज पैदावार करने वाले राज्यों के चुनावी नतीजों पर भी हो सकता है। महाराष्ट्र की शिव सेना यूबीटी की तरफ से प्याज निर्यात पर लगे रोक को मुद्दा बनाने की कोशिश हो रही थी और इसके लिए पार्टी केंद्र सरकार की नीतियों पर दोषी करार दे रही है।

कितना होगा निर्यात वाली प्याज का दाम?

केंद्र सरकार के अधिकारियों ने बताया है कि प्याज निर्यात की कीमत 550 डॉलर प्रति टन (तकरीबन 46 रुपये प्रति किलो) होगी और इस पर 40 फीसद का निर्यात शुल्क भी लगेगा। इस आधार पर निर्यातित प्याज की पूरी कीमत 770 डॉलर प्रति टन (64 रुपये प्रति टन) के करीब होगी। अभी दुनिया के कई हिस्सों में प्याज की खपत प्रभावित हुई है और माना जा रहा है कि भारत के प्याज निर्यातकों को बड़े ऑर्डर मिलेंगे।

कुछ पड़ोसी देश भी भारत से प्याज का आयात बड़ी मात्रा में करने को तैयार हैं क्योंकि अभी उनको दूर दराज के देशों से प्याज खरीदनी पड़ रही है। अभी निर्यात प्रतिबंधित होने के बावजूद बांग्लादेश, भूटान, यूएई, श्रीलंका आदि को कुछ मात्रा में प्याज की आपूर्ति की गई है।

प्याज के निर्यात पर कब लगा था बैन?

08 दिसंबर, 2023 में केंद्र सरकार ने पिछले वर्ष के खरीफ पैदावार की स्थिति को देखते हुए प्याज निर्यात को प्रतिबंधित कर दिया था। इसका असर घरेलू बाजार में खास तौर पर दिखा है। इस दौरान देश में प्याज की कीमतें अमूमन स्थिर रही हैं।

अप्रैल में देश की सबसे बड़ी प्याज मंडी नासिक में प्याज की औसतन कीमत 15 रुपये प्रति किलो रही है। निर्यात प्रतिबंधित किये जाने से पहले भारत लगातार इसका एक बड़ा निर्यातक रहा है। पिछले पांच-सात वर्षों के दौरान भारत ने औसतन 17 से 25 लाख टन प्याज का निर्यात सालाना किया है।

घरेलू बाजार में बढ़ेगा प्याज का भाव?

प्याज निर्यात पर लगे प्रतिबंध के बारे में उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय की सचिव निधि खरे ने बताया कि, "निर्यात होने के बावजूद प्याज की घरेलू कीमतों पर कोई खास असर नहीं होगा। अगर कीमतें बढ़ेंगी भी तो वह खास नहीं बढ़ेंगी। सरकार के विभाग भी पूरी स्थिति पर नजर बना कर रखेंगे। सरकार किसानों के साथ ही उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने के लिए भी प्रतिबद्ध है।"

उन्होंने बताया कि रबी फसल के दौरान 191 लाख टन प्याज उत्पादन होने की उम्मीद है जो देश की मांग को देखते हुए पर्याप्त है। देश में प्याज की औसतन मांग 17 लाख टन प्रति महीने है। इसके अलावा सरकार की तरफ से पांच लाख टन प्याज की खरीद बफर स्टाक के तौर पर की जा रही है ताकि किसी आपातकालीन स्थिति में घरेलू बाजार में कीमतों को स्थिर किया जा सके।

लोकसभा चुनाव पर क्या असर पड़ेगा?

डीजीएफटी ने शनिवार को प्याज निर्यात की छूट दी जबकि वित्त मंत्रालय ने शुक्रवार को देर शाम प्याज निर्यात से 40 फीसद निर्यात शुल्क वसूलने को लेकर अधिसूचना जारी की थी। सरकार के इस फैसले को आम चुनाव, खास तौर पर महाराष्ट्र में लोकसभा सीटों के चुनाव से जोड़ कर देखा जा रहा है।

नासिक, अहमदनगर, शोलापुर जैसे प्याज उत्पादक राज्यों में किसानों की तरफ से लगातार रैली निकाली जा रही थी कि प्याज निर्यात की छूट दी जाए। इसको शिव सेना यूबीटी लगातार समर्थन कर रही थी। कांग्रेस ने इस मुद्दे पर केंद्र सरकार को घेरा है।

भारत और चीन ने बढ़ाई सोने की खरीद, क्या किसी बड़े आर्थिक संकट से निपटने की हो रही तैयारी?

मार्च में दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों ने सोने की खरीद बढ़ाई है। RBI ने 5 टन गोल्ड खरीदा और उसका गोल्ड भंडार अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। RBI ने पिछले साल सिर्फ 16.2 टन सोना खरीदा था। वहीं इस साल वह अब तक वह 18.5 टन गोल्ड खरीद चुका है। चीन के केंद्रीय बैंक ने भी सोने की खरीद बढ़ाई है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI) ने मार्च में 5 टन गोल्ड खरीदा है। इस दौरान दुनिया भर के अन्य केंद्रीय बैंकों ने भी अपना गोल्ड रिजर्व बढ़ाया है। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के डेटा के मुताबिक, मार्च में सोने की शुद्ध खरीदारी 16 टन रही। सोने की भारी डिमांड के चलते कुल खरीद 40 टन से अधिक रही। हालांकि, इस दौरान करीब 25 टन सोना बेचा भी गया।

उच्चतम स्तर पर गोल्ड रिजर्व

भारत की बात करें, तो रिजर्व बैंक का गोल्ड भंडार अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। अप्रैल की शुरुआत में RBI के पास 822.1 टन गोल्ड था। इसका मतलब कि इस केंद्रीय बैंक ने 18.5 टन सोने की शुद्ध खरीद की है। RBI ने पिछले साल सिर्फ 16.2 टन सोना खरीदा था। वहीं, इस साल की पहली छमाही खत्म होने से पहले ही वह इससे ज्यादा गोल्ड खरीद चुका है।

दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों ने मार्च के दौरान सोने की खरीद बढ़ाई। इसमें खासकर उभरती अर्थव्यवस्थाओं (Emerging Markets) की हिस्सेदारी अधिक रही।

तुर्किये ने खरीदा सबसे ज्यादा सोना

मार्च में सेंट्रल बैंक ऑफ तुर्किये सोने का सबसे बड़ा खरीदार रहा। उसने अपने गोल्ड रिजर्व में 14 टन का इजाफा किया है। भारत के रिजर्व बैंक ने अपनी गोल्ड होल्डिंग को 5 टन बढ़ाया है। वहीं, पीपल्स बैंक ऑफ चाइना ने भी अपने गोल्ड रिजर्व में 5 टन और जोड़ा है। अन्य बड़े खरीदारों में कजाकिस्तान और सिंगापुर रहे। दोनों ने अपने सोने के भंडार को 4-4 टन बढ़ाया है। वहीं, रूस ने भी मार्च में 3 टन सोना खरीदा है।

केंद्रीय बैंकों की सोने की खरीद बढ़ाने से पता चलता है कि उनका इस कीमती धातु में भरोसा बना हुआ है, क्योंकि इससे आर्थिक अनिश्चितताओं से निपटने में मदद मिलती है। सोने को हमेशा से सबसे सुरक्षित निवेश माना जाता रहा है। खासकर, जब मार्केट ज्यादा अस्थिर होता है और मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ता है, तो इसकी अहमियत और भी बढ़ जाती है।

वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल की गोल्ड डिमांड ट्रेंड्स रिपोर्ट के अनुसार, 2024 की पहली तिमाही में दुनिया भर में सोने की मांग सालाना आधार पर 3 फीसदी बढ़ी है। यह गोल्ड डिमांड के लिहाज से 2016 के बाद सबसे मजबूत पहली तिमाही है।

चार महीने में 80 हजार टेक कर्मचारियों ने गंवाई नौकरी, इन कंपनियों ने निकाली पूरी टीम

परिवहन विशेष न्यूज

कैलेंडर वर्ष 2024 के पहले चार महीनों के दौरान वैश्विक स्तर पर टेक्नोलॉजी सेक्टर के 80 हजार से ज्यादा कर्मचारियों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी है। इस छंटनी से वैश्विक स्तर पर पूरा स्टार्टअप इकोसिस्टम परेशान हो रहा है। टेक्नोलॉजी क्षेत्र में छंटनी पर नजर रखने वाली वेबसाइट लेऑफ डाट एफवाईआई के हालिया डेटा के मुताबिक इस साल तीन मई तक वैश्विक स्तर पर 80230 कर्मचारियों की छंटनी हुई है।

नई दिल्ली। कैलेंडर वर्ष 2024 के पहले चार महीनों के दौरान वैश्विक स्तर पर टेक्नोलॉजी सेक्टर के 80 हजार से ज्यादा कर्मचारियों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी है। इस छंटनी से वैश्विक स्तर पर पूरा स्टार्टअप इकोसिस्टम परेशान हो रहा है। टेक्नोलॉजी क्षेत्र में छंटनी पर नजर रखने वाली वेबसाइट लेऑफ डाट एफवाईआई के हालिया डेटा के मुताबिक, इस साल तीन मई तक वैश्विक स्तर पर 80,230 कर्मचारियों की छंटनी हुई है।

आईटी, टेक और स्टार्टअप इकोसिस्टम में मंदी के कारण कैलेंडर वर्ष 2022 और 2023 के दौरान वैश्विक स्तर पर टेक्नोलॉजी कंपनियों ने 4.25 लाख कर्मचारियों की छंटनी की थी। रिपोर्ट के अनुसार, इस वर्ष छंटनी करने वाली दिग्गज कंपनियों में गूगल और टेस्ला प्रमुख हैं।

गूगल और टेस्ला में बड़े पैमाने पर छंटनी

दिग्गज टेक कंपनी गूगल ने पुनर्गठन प्रक्रिया के तहत अपनी एक प्रमुख टीम से करीब 200 कर्मचारियों की छंटनी की है। वहीं, एलन मस्क के नेतृत्व वाली इलेक्ट्रिक कार निर्माता कंपनी टेस्ला ने हाल ही में पूरी चार्जिंग टीम से सैकड़ों लोगों को नौकरी से निकाला है। इससे पहले टेस्ला ने वैश्विक स्तर पर 10 प्रतिशत करीब 14 हजार कर्मचारियों की छंटनी की थी।

ओला में भी हो सकती है छंटनी

भारत की बात की जाए तो कैब सेवा प्रदाता कंपनी ओला कैब्स ने हाल में कारोबार पुनर्गठन प्रक्रिया शुरू की है। इससे करीब 10 प्रतिशत कर्मचारियों को छंटनी का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, अमेरिका के उपभोक्ता अनुभव प्रबंधन प्लेटफार्म स्प्रिंकलर ने 116 कर्मचारियों को नौकरी से निकाला है।

वहीं, फिटनेस कंपनी पेलोटन ने इसी हफ्ते करीब 400 कर्मचारियों की छंटनी की है, जो कंपनी की कुल वर्कफोर्स का करीब 15 प्रतिशत हैं।

कोटक महिंद्रा बैंक का मुनाफा 18% बढ़ा, डिविडेंड का भी एलान, पिछले दिनों RBI ने लिया था बैंक पर

परिवहन विशेष न्यूज

कोटक महिंद्रा बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 की आखिरी तिमाही के नतीजों का एलान कर दिया है। प्राइवेट सेक्टर के तीसरे सबसे बड़े बैंक को मार्च तिमाही में 4133 करोड़ रुपये का प्रॉफिट हुआ है। यह पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 18 फीसदी अधिक है। ब्याज से कमाई 13 फीसदी बढ़कर 6909 करोड़ रुपये पर रही है। बैंक ने एनालिस्टों की उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन किया है।

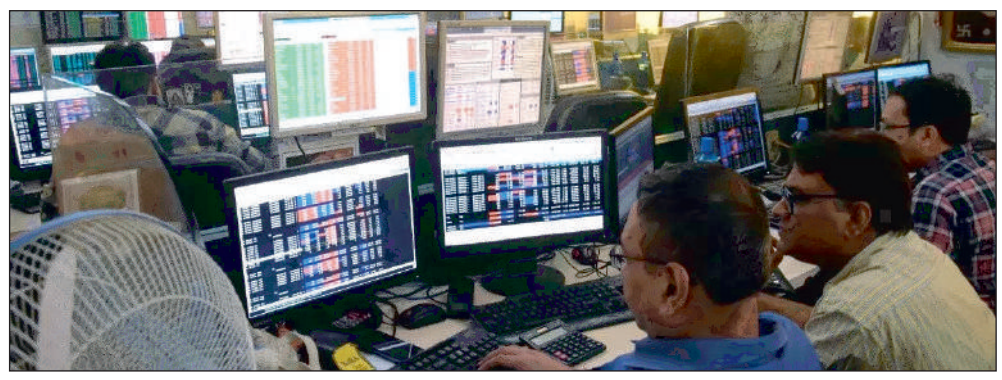

नई दिल्ली। कोटक महिंद्रा बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 की आखिरी तिमाही के नतीजों का एलान कर दिया है। प्राइवेट सेक्टर के तीसरे सबसे बड़े बैंक को मार्च तिमाही में 4,133 करोड़ रुपये का प्रॉफिट हुआ है। यह पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 18 फीसदी अधिक है। कोटक की ब्याज से कमाई 13 फीसदी बढ़कर 6,909 करोड़ रुपये पर रही है। बैंक ने एनालिस्टों की उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन किया है।

असेट क्वालिटी भी बेहतर हुई

मार्च तिमाही में बैंक का ग्रॉस NPA घटकर 1.39 फीसदी पर आ गया। यह पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 1.78 फीसदी पर था। नेट NPA भी सालाना आधार पर 0.37 फीसदी से कम हो कर 0.34 फीसदी पर आ गया है। कोटक बैंक की नेट इंटरेस्ट मार्जिन (NIM) तिमाही आधार पर 5.22 फीसदी से बढ़कर 5.28 फीसदी पर रही है।

2 रुपये प्रति शेयर का डिविडेंड

कोटक महिंद्रा बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए 2 रुपये प्रति शेयर का डिविडेंड देने की बात कही है। हालांकि, यह डिविडेंड तभी मिलेगा, जब आगामी AGM में इसे शेयरहोल्डर्स की मंजूरी मिल जाएगी।

कोटक महिंद्रा बैंक के शेयर

पिछले दिनों रिजर्व बैंक (RBI) ने कोटक महिंद्रा बैंक (Kotak Mahindra Bank) के खिलाफ सख्त एक्शन लिया था। उसने कोटक को नए क्रेडिट कार्ड जारी करने के साथ ही ऑनलाइन माध्यम से नए ग्राहक जोड़ने पर भी पाबंदी लगा दी थी। इससे कोटक के शेयरों में तेज गिरावट आई।

कोटक के शेयर शुक्रवार (3 मई) को 1.81 फीसदी की गिरावट के साथ 1,547.25 रुपये पर बंद हुए थे। पिछले 6 महीने में कोटक से निवेशकों को 11 और सालभर में 20 फीसदी का नेगेटिव रिटर्न मिला है। अभी तक किसी ब्रोकरेज ने बैंक की रेटिंग नहीं घटाई है। लेकिन, बैंक मैनेजिंग डायरेक्टर केवीएस मेनन के इस्तीफे से निवेशकों का भरोसा थोड़ा कमजोर जरूर हुआ है।

क्या है EPFO का लॉयल्टी कम लाइफ बेनिफिट, तगड़े फायदे के लिए बस इतनी है शर्त

परिवहन विशेष न्यूज

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के सब्सक्राइबर्स की संख्या में लगातार तेजी आ रही है। ईपीएफओ में रिटायरमेंट बेनिफिट मिलता है जिसकी वजह से कई लोग इसमें निवेश करना पसंद करते हैं। इसके अलावा इसमें लॉयल्टी कम लाइफ बेनिफिट भी दिया जाता है। जिसकी जानकारी कई सब्सक्राइबर को नहीं है। इस बेनिफिट में कर्मचारी को सीधा 50000 रुपये का लाभ मिल सकता है।

नई दिल्ली। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) ने कर्मचारियों के लिए प्रोविडेंट फंड स्कीम (Provident Fund Scheme) शुरू की। ईपीएफ सब्सक्राइबर्स की संख्या में लगातार तेजी आई। इस स्कीम में कर्मचारी को रिटायरमेंट के बाद पेंशन और एकमुश्त राशि का लाभ मिलता है।

पीएफ में कर्मचारी के साथ कंपनी द्वारा योगदान दिया जाता है, जिसका लाभ कर्मचारी को रिटायरमेंट के बाद मिलता है। ईपीएफओ के कई नियम है जिसकी जानकारी सब्सक्राइबर्स को नहीं होती है। इन नियमों में से एक नियम Loyalty-cum-Life बेनिफिट से जुड़ा है। इसमें बेनिफिट में कर्मचारी को डायरेक्ट 50,000 रुपये का लाभ मिलता है। हालांकि, इसके लिए उन्हें शर्त पूरी करनी होती है।

क्या है Loyalty-cum-Life बेनिफिट की शर्त

सभी पीएफ अकाउंट (PF Account) होल्डर्स को सलाह दी जाती है कि वो हमेशा एक ही ईपीएफ अकाउंट में योगदान दे। अगर वह ऐसा करते हैं और लगातार 20 साल तक निवेश करते हैं तो उन्हें Loyalty-cum-Life बेनिफिट का फायदा मिल सकता है।

CBDT ने यह बेनिफिट देने की सिफारिश की थी। सीबीडीटी ने कहा था कि इसका लाभ उन पीएफ अकाउंट होल्डर्स को मिलनी चाहिए जो लगातार 20 साल तक योगदान कर रहे हैं।

सीबीडीटी की इस सिफारिश के बाद ईपीएफओ ने यह लाभ देना शुरू किया था। इसका लाभ उन सब्सक्राइबर्स को मिलता है जो 20 साल तक एक पीएफ अकाउंट अंशदान डालते हैं। ईपीएफओ उन्हें 50,000 रुपये का अतिरिक्त लाभ देता है।

किसे मिलता है कितना लाभ

अगर किसी कर्मचारी की बेसिक सैलरी 5,000 रुपये है तो उसे 30,000 रुपए का फायदा मिलता है। वहीं, जिनकी बेसिक सैलरी 5,001 रुपये से लेकर 10,000 रुपये तक की होती है उन्हें 40,000 रुपये का लाभ मिलता है। इसी तरह जिसकी बेसिक सैलरी 10,000 रुपये से ज्यादा का होता है तो उन्हें 50,000 रुपये का लाभ मिलता है।

Loyalty-cum-Life बेनिफिट का फायदा उठाने का बेहतर तरीका है कि आप जब भी नौकरी चेंज करें तो एक ही ईपीएफ अकाउंट को जारी रखें। वर्तमान में अब पीएफ अकाउंट ट्रांसफर (PF Account Transfer) ऑटोमैटिक हो जाता है, फिर भी आप एक बार अपने पुराने नियोक्ता और मौजूदा नियोक्ता को पीएफ अकाउंट की जानकारी दें।

एक्सपर्ट भी सलाह देते हैं कि नौकरी करते समय आपको पीएफ विड्रॉल (PF Withdrawal) नहीं करना चाहिए। अगर आप ऐसा करते हैं तो आपको इनकम टैक्स के साथ रिटायरमेंट फंड में नुकसान हो सकता है। इसके अलावा आपको पेंशन बेनिफिट और लॉयल्टी का भी नुकसान हो सकता है।

30 की हुई दिल्ली मेट्रो: 288 स्टेशन... 71 लाख पैसेंजर जर्नी; बोटेनिकल गार्डन मेट्रो स्टेशन को मिला ये खास अवार्ड...

दिल्ली मेट्रो रेल निगम के स्थापना के 29 वर्ष पूरे हो गए। इसके साथ ही तीन मई को दिल्ली मेट्रो स्थापना के 30वें वर्ष में प्रवेश कर गई। अपने स्थापना के 30वें वर्ष में मेट्रो एक नया मुकाम हासिल कर सकती है। मौजूदा समय में दिल्ली सहित एनसीआर में मेट्रो के कुल 12 कॉरिडोर हैं। इस वजह से मेट्रो का नेटवर्क 393 किलोमीटर और 288 मेट्रो स्टेशन तक पहुंचा है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) के स्थापना के 29 वर्ष पूरे हो गए। इसके साथ ही तीन मई को दिल्ली मेट्रो स्थापना के 30वें वर्ष में प्रवेश कर गई।

अपने स्थापना के 30वें वर्ष में मेट्रो एक नया मुकाम हासिल कर सकती है। मौजूदा समय में दिल्ली सहित एनसीआर में मेट्रो के कुल 12 कॉरिडोर हैं। इस वजह से मेट्रो का नेटवर्क 393 किलोमीटर और 288 मेट्रो स्टेशन तक पहुंच गया है। मेट्रो में पैसेंजर जर्नी 71 लाख तक पहुंची चुकी है।

तीन नए मेट्रो कॉरिडोर का हो रहा निर्माण

फेज चार में डीएमआरसी तीन नए मेट्रो कारिडोर का निर्माण करा रहा है, जिसमें 28.92 किलोमीटर लंबी जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर, मजलिस पार्क-मौजपुर (12.55 किलोमीटर) व तुगलकाबाद-एरोसिटी (23.65 किलोमीटर) शामिल है।

जनकपुरी पश्चिम -आरके आश्रम कॉरिडोर पर जनकपुरी पश्चिम से कृष्णा पार्क एक्सटेंशन तक ढाई किलोमीटर के भूमिगत कॉरिडोर की सुरंग काफी पहले तैयार हो चुकी है।

इस कॉरिडोर पर इस वर्ष जुलाई तक मेट्रो का परिचालन शुरू करने का लक्ष्य है। तकनीकी कारणों से कुछ विलंब होने के बावजूद इस वर्ष के अंत तक इस हिस्से पर मेट्रो का परिचालन शुरू हो सकता है।

एक साल के अंदर 400 किमी. पार पहुंच सकता है दिल्ली मेट्रो का परिचालन

इसके अलावा जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर पर ही मजलिस पार्क से हैदरपुर बादली मोड़ के बीच एलिवेटेड कारिडोर का काम भी काफी आगे बढ़ चुका है।

यदि इस इसे पर भी एक वर्ष के अंदर मेट्रो का परिचालन शुरू हुआ तो एक वर्ष में एनसीआर में मेट्रो का नेटवर्क 400 किलोमीटर के पार पहुंच सकता है।

दिल्ली मेट्रो के 30वें स्थापना दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने वर्ष भर में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अपने कर्मचारियों को सम्मानित किया।

साथ ही बोटेनिकल गार्डन को सबसे बेहतर मेट्रो स्टेशन और शास्त्री पार्क को सबसे अच्छे मेट्रो डिपो का पुरस्कार दिया गया।

विपक्षी आईएनडीआईए से पीएम प्रत्याशी कौन होगा? शशि थरूर ने दिया यह जवाब

कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा कि विपक्षी पार्टियां जो साथ कैंपेन कर रही हैं या एक दूसरे के खिलाफ सभी लोकसभा चुनाव के बाद साथ आएंगी और पीएम प्रत्याशी का चुनाव करेंगी। प्रधानमंत्री ऐसा होगा जो सबों की सुनेगा। शशि थरूर ने अयोध्या में रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल न होने के पार्टी के फैसले का भी बचाव किया।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा कि विपक्षी पार्टियां जो साथ कैंपेन कर रही हैं या एक दूसरे के खिलाफ सभी लोकसभा चुनाव के बाद साथ आएंगी और पीएम प्रत्याशी का चुनाव करेंगी। प्रधानमंत्री ऐसा होगा, जो सबों की सुनेगा।

क्या कुछ बोले शशि थरूर?

उन्होंने कहा कि गठबंधन सरकार से घबराने की जरूरत नहीं है। यह सच है कि गठबंधन सरकार एक पार्टी की बहुमत वाली सरकार से अलग तरीके से चलती है, लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास प्रदर्शन एक पार्टी की बहुमत वाली सरकार की तुलना में ऐसी व्यवस्थाओं के तहत बेहतर रहा है। उन्होंने कहा,

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को कई मायनों में उस तरह के सर्वसम्मति निर्माता का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। उनके गठबंधन में 26 दल थे, लेकिन उनकी सरकार प्रभावी परिणाम देने में सक्षम थी। अभी हम राष्ट्रपति के तौर पर चलने वाली संसदीय प्रणाली देख रहे हैं, जो सबसे खराब है।

शशि थरूर ने अयोध्या में रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल न होने के पार्टी के फैसले का भी बचाव किया और कहा कि निमंत्रण को अस्वीकार करना सही था, क्योंकि यह अनिवार्य रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के महिमामंडन के लिए एक राजनीतिक मंच अधिक था। मेरे विचार से अगर हमने ऐसा किया होता तो यह एक गलती होती।

भाजपा पर बरसे कांग्रेस नेता

शशि थरूर ने भाजपा पर विरासत कर को लेकर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस मैनिफेस्टो कमिटी ने इसे लेकर कोई चर्चा भी नहीं की। सत्तारूढ़ भाजपा किसी भी हथियार का इस्तेमाल करने को तैयार है, क्योंकि उसे हार साफ नजर आ रही है।

भाजपा उड़िया अस्मिता और राज्य में लोकतांत्रिक और संवैधानिक प्रक्रिया को दबाने के अपने प्रयास को सफल नहीं होने देगी: धर्मेंद्र प्रधान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुवनेश्वर। रुढ़िवादी समाज के सामने आज एक बड़ा प्रश्न खड़ा है। रुढ़िवादी भाषा, विरासत, गौरव, अस्मिता और संस्कृति पर बड़ा प्रश्नचिह्न है। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शुक्रवार को प्रदेश भाजपा कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि भाजपा एक जिम्मेदार पार्टी के रूप में समाज की सुरक्षा को अक्षुण्ण रखने के लिए राज्य में लोकतांत्रिक और संवैधानिक प्रक्रिया को बाधित करने के किसी भी प्रयास की अनुमति नहीं देगी। इतिहास हजारों साल पुराना है. वहीं, केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इस बार का चुनाव ओडिशा अस्मिता, अस्मितावा, ओडिशा वुधम, नुआफिधर की रक्षा के बारे में होगा । केंद्रीय मंत्री ने कहा कि ओडिशा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शासन प्रणाली का सबसे बड़ा लाभार्थी रहा है। एक ओर जहां ओडिशा में मोदी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है, वहीं प्रधानमंत्री ने ओडिशा की शासन व्यवस्था को लेकर चिंता बढ़ा दी है । 24 साल की स्थिर सरकार के बाद भी, अपार संभावनाओं वाला राज्य ओडिशा उस स्थिति में नहीं है, जहां उसे होना चाहिए। ओडिशा का विकास हर तरफ से चौपट हो गया है। भाजपा को आशीर्वाद मिला तो खुद प्रधानमंत्री ने कहा है कि ओडिशा विकसित भारत का नंबर 1 राज्य बनेगा । हालाँकि, वर्तमान समय का मुख्य प्रश्न उड़िया भाषा और अस्मिता है, जो एक बड़े प्रश्न में है। श्री प्रधान ने कहा कि एक रूढ़िवादी के रूप में एक विदेशी राज्य से राज्यसभा के लिए चुना जाना मेरे लिए सम्मान की बात है। आज मेरे बारे में एक रुढ़िवादी नेता होने का प्रश्न है, जिसका प्रमाणपत्र रुढ़िवादी लोग देंगे। लेकिन ओडिशा का नेतृत्व कौन संभालेगा ये आज एक सवाल है । नवीन पटनायक सरकार की क्षेत्रीय टीम का नेतृत्व एक बाहरी व्यक्ति कर रहा है। अमला का एक गिरोह रूढ़िवादी लोगों को चोट पहुंचाने की कोशिश कर रहा है। हाल के वर्षों में ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जिसने रुढ़िवादी लोगों को पहले से ही परेशान कर रखा है। कोविड के दौरान महाप्रभु की शोभा यात्रा किसने रोकी? सर्वोच्च न्यायालय में जनहित का मुकदमा किसने चलाया? ओडिशा सरकार का सच क्या था, मुख्यमंत्री में नैतिकता है तो जवाब दें ।एनसीआरबी की रिपोर्ट ने महिला उत्पीड़न की हकीकत बयां कर दी है। राज्य के 1 लाख सरकारी दफ्तरों में पद खाली हैं । ओडिशा के करीब 1 करोड़ लोग बाहर काम करने जा रहे हैं । जिस सीट का मुख्यमंत्री ने 24 साल तक प्रतिनिधित्व किया, अब बलांगीर के हिन्जिली और कांतबांजी से अधिक लोग वोट करने जा रहे हैं, जो अब उम्मीदवार हैं। 24 साल के लंबे शासनकाल में अगर आप सवाल करते हैं तो आपका अपमान होता है । विदेश में काम करने जाना रूढ़िवादिता का विषय है। सच उसे परेशान कर रहा होगा । वर्तमान चुनाव में रूढ़िवादी समुदाय इन सभी मुद्दों से निपटेगा। लोकतंत्र में जनमत सर्वोपरि है। लेकिन जब मामला स्वार्थपूर्ण और दिल से बाहर का हो तो वह जनसंगठन में उपयोगी नहीं होता। केंद्रीय मंत्री ने कहा, इस बार का चुनाव ओडिशा अस्मिता, अस्मितावा और ओडिशा के भविष्य के लिए होगा।

इस मौके पर पूर्व प्रदेश अध्यक्ष समीर मोहंती, प्रदेश प्रवक्ता सुदीप्त राय व दिलीप मल्लिक, वरिष्ठ नेता दुलाल प्रधान व सरोज पटनायक प्रमुख रूप से मौजूद थे ।

पाकिस्तानी के लिए फिर देवदूत बनी भारतीय नौसेना, आपात संदेश के बाद बचाई जान...

भारतीय नौसेना ने फिर देवदूत बनकर मुसीबत में फंसे पाकिस्तानी की जान बचाई। नौसेना ने ईरानी नौका अल रहमानी पर सवार पाकिस्तानी चालक दल के सदस्य की जान बचाई। नौसेना इससे पहले मार्च में अरब सागर में ईरानी जहाज अल-कंबर का अपहरण करने वाले नौ समुद्री लुटेरों को आत्मसमर्पण के लिए विवश करके 23 पाकिस्तानियों को बचाया था।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना ने फिर देवदूत बनकर मुसीबत में फंसे पाकिस्तानी की जान बचाई। ईरानी नौका पर सवार पाकिस्तानी ने बचाने की गुहार लगाई थी। नौसेना के आईएनएस सुमेधा ने आपात संदेश पर तुरंत कार्रवाई करते हुए ईरानी नौका अल रहमानी पर सवार पाकिस्तानी चालक दल के सदस्य को चिकित्सा सहायता देकर उनकी जान बचाई।

नौसेना इससे पहले मार्च में अरब सागर में ईरानी जहाज अल-कंबर का अपहरण करने वाले नौ समुद्री लुटेरों को आत्मसमर्पण के लिए विवश करके 23 पाकिस्तानियों को बचाया था। नौसेना के प्रवक्ता द्वारा एक्स पर पोस्ट किया, आपात संदेश पर तुरंत कार्रवाई करते हुए अरब सागर में तैनात युद्धपोत आइएनएस सुमेधा ने मछली पकड़ने वाली ईरानी नौका अल रहमानी को 30 अप्रैल को रोका। जहाज की बोर्डिंग टीम और चिकित्सा विशेषज्ञ नौका पर चढ़े और नौका के 20 सदस्यीय पाकिस्तानी चालक दल के एक सदस्य को चिकित्सा सहायता देकर उसकी जान बचाई। उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। चिकित्सीय प्रबंधन के बाद अब वह राहत महसूस कर रहा है।

संकटग्रस्त तेल टैंकर को रोका

नौसेना के जहाज आइएनएस कोच्चि ने 28 अप्रैल को पनामा के झंडे वाले संकटग्रस्त कच्चे तेल टैंकर एमवी एंड्रोमेडा स्टार पीएम को रोका और स्थिति का आकलन करने के लिए नौसेना के हेलीकाप्टर ने हवाई टोही की थी। जोखिम मूल्यांकन के लिए संकटग्रस्त टैंकर पर विस्फोटक आयुध निपटान (ईओडी) टीम को भी तैनात किया गया था। कुल 30 चालक दल (22 भारतीय नागरिकों सहित) सुरक्षित हैं। टैंकर अपने गंतव्य की तरफ बढ़ रहा है।

कृपया ध्यान दें! एयर इंडिया ने बैगेज पॉलिसी में किया बदलाव, अब महज 15 किलो तक ले जा सकेंगे सामान

परिवहन विशेष न्यूज

एअर इंडिया की किफायती उड़ान मे अब केवल 15 किलोग्राम सामान मुफ्त में ले जा सकेंगे। घाटे में चल रही एअर इंडिया ने घरेलू यात्रा के लिए अपनी सामान नीति या बैगेज पॉलिसी में बदलाव किया है। एयरलाइन कंपनी ने किफायती किराया श्रेणी या इकोनॉमी क्लास के लिए फेयर फैमिली मॉडल के तहत फ्री केबिन बैगेज एलाउंस घटाकर 15 किलो किलोग्राम कर दिया है।

दिल्ली। एअर इंडिया की किफायती उड़ान मे अब केवल 15 किलोग्राम सामान मुफ्त में ले जा सकेंगे। घाटे में चल रही एअर इंडिया ने घरेलू यात्रा के लिए अपनी सामान नीति या बैगेज पॉलिसी में बदलाव किया है। एयरलाइन कंपनी ने किफायती किराया श्रेणी या इकोनॉमी क्लास के लिए फेयर फैमिली मॉडल के तहत फ्री केबिन बैगेज एलाउंस घटाकर 15 किलो किलोग्राम कर दिया है। पहले कंफर्ट क्लास में 20 किलो, कंफर्ट प्लस में 25 किलो सामान ले जाने की थी अनुमति थी।

कब हुई थी फेयर फैमिली मॉडल की शुरुआत?

एअर इंडिया ने पिछले साल फेयर फैमिली मॉडल की शुरुआत की थी। एअर इंडिया के प्रवक्ता ने कहा, फेयर फैमिली मॉडल को यात्रियों को उस तरह का किराया और सेवाएं चुनने की सुविधा देने के लिए डिजाइन किया गया है, जो उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों।

प्रवक्ता ने क्या कुछ कहा?

प्रवक्ता ने शनिवार को कहा कि इकोनमी क्लास के तहत तीन किराया श्रेणियां हैं - कम्फर्ट, कम्फर्ट प्लस और फ्लेक्स। दो मई से घरेलू मार्गों पर 'कम्फर्ट' और 'कम्फर्ट प्लस' श्रेणियों के लिए फ्री केबिन बैगेज एलाउंस 15 किलोग्राम कर दिया गया है। पहले 'कम्फर्ट' श्रेणी के लिए 20 किलोग्राम और कम्फर्ट प्लस श्रेणी के लिए 25 किलोग्राम फ्री केबिन बैगेज एलाउंस की अनुमति थी। 'फ्लेक्स' श्रेणी में फ्री केबिन बैगेज एलाउंस 25 किलो है। फेयर फैमिली मॉडल से पहले एअर इंडिया की घरेलू उड़ानों में यात्रियों को 25 किलोग्राम सामान बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के ले जाने की अनुमति थी। घरेलू मार्गों पर बिजनेस क्लास में फ्री केबिन बैगेज एलाउंस 25 किलोग्राम से 35 किलोग्राम तक है। अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में फ्री केबिन बैगेज एलाउंस अलग-अलग होता है। अन्य घरेलू एयरलाइंस में भी यात्रियों को बिना अतिरिक्त शुल्क के 15 किलोग्राम केबिन बैगेज ले जाने की अनुमति है।

'अच्छे और बुरे आतंकवाद में नहीं हो सकता अंतर', CBI निदेशक बोले- वैश्विक सुरक्षा के लिए ऑनलाइन कट्टरपंथ बड़ी चुनौती

भारत ने कहा है कि ऑनलाइन कट्टरपंथ वैश्विक सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती है। साथ ही इस बात को रेखांकित किया कि अच्छे आतंकवाद और बुरे आतंकवाद में अंतर नहीं किया जा सकता है। सीबीआई निदेशक ने स्पष्ट रूप से सभी प्रकार के आतंकवाद की निंदा की और कहा कि अच्छे आतंकवाद और बुरे आतंकवाद के बीच कोई अंतर नहीं किया जा सकता।

नई दिल्ली। भारत ने कहा है कि ऑनलाइन कट्टरपंथ वैश्विक सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती है। साथ ही इस बात को रेखांकित किया कि अच्छे आतंकवाद और बुरे आतंकवाद में अंतर नहीं किया जा सकता है। फ्रांस के ल्योन में नेशनल सेंट्रल ब्यूरो के प्रमुखों के हाल ही में संपन्न 19वें इंटरपोल सम्मेलन में सीबीआई निदेशक प्रवीण सूद ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। उन्होंने सम्मेलन में संगठित अपराध, आतंकवाद और चरमपंथी विचारधाराओं के बीच साठगांठ से उत्पन्न चुनौतियों पर प्रकाश डाला। सूद ने कहा, ऑनलाइन कट्टरपंथ वैश्विक सुरक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती है। उन्होंने स्पष्ट रूप से सभी प्रकार के आतंकवाद की निंदा की और कहा कि अच्छे आतंकवाद और बुरे आतंकवाद के बीच कोई अंतर नहीं किया जा सकता। सीबीआई की ओर से जारी बयान के अनुसार, इंटरपोल सम्मेलन में 136 देशों के नेशनल सेंट्रल ब्यूरो ने भाग लिया, जिसका प्रतिनिधित्व वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने किया। प्रत्येक देश में नेशनल सेंट्रल ब्यूरो (NCB) इंटरपोल के साथ समन्वय के लिए जिम्मेदार नोडल संगठन है। भारत में सीबीआई को एनसीबी नामित किया गया है। इस सम्मेलन का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय अपराधों से निपटने के लिए इंटरपोल और एनसीबी के बीच सहयोग को मजबूत करना रहा। सीबीआई बयान के अनुसार, सम्मेलन के दौरान भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने संगठित अपराध, आतंकवाद, मादक पदार्थों की तस्करी, मनी लॉन्ड्रिंग और ऑनलाइन कट्टरपंथ समेत विभिन्न अपराधों से निपटने के लिए इंटरपोल चैनलों पर समन्वय बढ़ाने के लिए कई देशों की कानून-प्रवर्तन एजेंसियों के साथ चर्चा की।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023